हरिभूमि
झज्जर-बहादुरगढ़ भूमि
रोहतक, रविवार, 2 नवंबर 2025

11 पांडुशिला से चांदी का छतर, कलश सिंहासन...

12 हरियाणा दिवस पर सजी लोक-कला, शौर्य और...

स्मॉल कैप फंड्स ने 26 फीसदी तक दिया रिटर्न

भर दी निवेशकों की झोली

स्मॉल कैप म्यूचुअल फंड्स हमेशा से हाई रिटर्न के लिए जाने जाते रहे हैं। हालांकि इनके रिटर्न पर बाजार से जुड़े उतार-चढ़ाव का असर भी पड़ता है, लेकिन आंकड़े बताते हैं कि लंबी अवधि में पॉजिटिव रिटर्न मिलने की गुंजाइश काफी अधिक रहती है। एसोसिएशन ऑफ म्यूचुअल फंड्स इन इंडिया (एएमएफआई) की वेबसाइट पर जिन 13 स्मॉल कैप फंड्स के पिछले 10 साल के आंकड़े मौजूद हैं, उनमें से किसी के भी डायरेक्ट प्लान का सालाना रिटर्न (सीएजीआर) 14% से कम नहीं है। यही नहीं, इनमें से टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स ने लंपसम निवेश पर पिछले 10 साल में 19 से 21% फीसदी तक एनुअल रिटर्न दिया है।

- एसबीआई, एचडीएफसी समेत कई फंड्स का बेहतरीन प्रदर्शन
- 5 स्मॉल कैप फंड्स ने 7 गुना तक कर दी लंपसम की रकम
- 10 साल में एसआईपी पर 19 से 26 फीसदी तक रिटर्न दिया
- 1 लाख के लंपसम से 7 लाख तक का फंड तैयार हुआ
- इक्विटी में निवेश करना हो, तो लॉन्ग टर्म एसआईपी बेहतर तरीका

एसआईपी पर भी ऊंचा रिटर्न

टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स ने पिछले 10 साल में लंपसम के साथ ही साथ सिस्टमैटिक इनवेस्टमेंट प्लान (एसआईपी) के जरिये निवेश करने वालों को भी 19% से लेकर 26% तक एनुअलाइज्ड रिटर्न दिए हैं। इस शानदार रिटर्न की बदौलत इन फंड्स ने 1 लाख रुपये के एकमुश्त निवेश को 10 साल में 7 लाख रुपये तक बना दिया है, जबकि 10 हजार रुपये की एसआईपी से 10 साल में 47.5 लाख रुपये तक का फंड जमा हुआ है।

ये टॉप 5 स्कीम

टॉप 5 स्मॉल कैप फंड्स की लिस्ट में एचडीएफसी म्यूचुअल फंड, एसबीआई म्यूचुअल फंड, निप्पॉन इंडिया म्यूचुअल फंड, एक्सिस म्यूचुअल फंड और क्वांट म्यूचुअल फंड जैसे दिग्गज फंड हाउस की स्कीम्स शामिल हैं।

लॉन्ग टर्म इनवेस्टमेंट क्यों है बेहतर

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के पिछले आंकड़ों के तमाम विश्लेषण यही बताते हैं कि इनमें लंबी अवधि के लिए निवेश करना बेहतर रहता है।हाल ही में आई ऐसी ही एक रिपोर्ट के मुताबिक निफ्टी स्मॉल कैप 250 इंडेक्स का 10 साल की एसआईपी का मंथली रोलिंग रिटर्न (एक्सआरआरआर) 99% समय पॉजिटिव रहा है। यानी अगर इक्विटी में निवेश करना हो, तो लॉन्ग टर्म एसआईपी उसका बेहतर तरीका है।

10 साल में बेस्ट रिटर्न देने वाले टॉप फंड

निप्पॉन इंडिया स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- लंपसम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 21.51 %
- 1 लाख के लंपसम की 10 साल में फंड वैल्यू : 7,01,649 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 23.96 %
- 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 42,63,065 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.64 %

क्वांट स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- लंपसम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 20.42 %
- 1 लाख के लंपसम की 10 साल में फंड वैल्यू : 6,41,189 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 25.99 %
- 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 47,56,696 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.71 %

एक्सिस स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- लंपसम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 19.91 %
- 1 लाख के लंपसम की 10 साल में फंड वैल्यू : 6,14,545 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 22.01 %
- 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 38,35,386 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.57%

एचडीएफसी स्मॉल कैप फंड - डायरेक्ट प्लान

- लंपसम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 19.54 %
- 1 लाख के लंपसम की 10 साल में फंड वैल्यू : 5,95,844 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 21.43 %
- 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 37,17,373 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.68%

एसबीआई स्मॉल कैप फंड-डायरेक्ट प्लान

- लंपसम इनवेस्टमेंट पर 10 साल का रिटर्न (सीएजीआर) : 19.44 %
- 1 लाख के लंपसम की 10 साल में फंड वैल्यू : 5,90,878 रुपये
- एसआईपी पर 10 साल का एन्युलाइज्ड रिटर्न : 20.13%%
- 10 हजार मंथली एसआईपी की 10 साल में फंड वैल्यू : 34,65,264 रुपये
- एक्सपेंस रेशियो : 0.76%

हाई रिटर्न, हाई रिस्क इनवेस्टमेंट

ऊपर दी गई सभी स्कीम समेत तमाम स्मॉल कैप फंड्स को रिस्कोमीटर पर बहुत अधिक रिस्क की रेटिंग दी जाती है। अलग-अलग मार्केट कैप पर आधारित म्यूचुअल फंड्स में भी स्मॉल कैप को मिड कैप और लार्ज कैप की तुलना में ज्यादा रिस्की माना जाता है। यानी स्मॉल कैप फंड हाई रिटर्न, हाई रिस्क इनवेस्टमेंट की कैटेगरी में आते हैं। इसके अलावा म्यूचुअल फंड्स में पिछले रिटर्न के आगे भी जारी रहने की कोई गारंटी नहीं होती। इसलिए इनमें निवेश के बारे में कोई फैसला करने से पहले अपनी रिस्क लेने की क्षमता को ध्यान में रखना चाहिए।

क्या है स्मॉल कैप फंड्स

स्मॉल कैप फंड्स एक प्रकार का म्यूचुअल फंड है जो छोटी कंपनियों के शेयरों में निवेश करता है। इन कंपनियों की मार्केट कैपिटलाइजेशन कम होती है, लेकिन इनमें उच्च विकास क्षमता होती है। स्मॉल कैप फंड्स की विशेषताएं

1. **उच्च विकास क्षमता**: स्मॉल कैप कंपनियों में उच्च विकास क्षमता होती है, जिससे इनके शेयरों की कीमतें बढ़ सकती हैं।
2. **जोखिम**: स्मॉल कैप फंड्स में जोखिम अधिक होता है, क्योंकि छोटी कंपनियों की वित्तीय स्थिति अस्थिर हो सकती है।
3. **विविधीकरण**: स्मॉल कैप फंड्स में निवेश करने से आपके पोर्टफोलियो में विविधीकरण होता है।
4. **लंबी अवधि के लिए निवेश**: स्मॉल कैप फंड्स में निवेश लंबी अवधि के लिए करना चाहिए, ताकि आप बाजार की अस्थिरता को सहन कर सकें।

स्मॉल कैप फंड्स के लाभ

1. **उच्च रिटर्न**: स्मॉल कैप फंड्स उच्च रिटर्न प्रदान कर सकते हैं।
2. **विविधीकरण**:निवेश करने से आपके पोर्टफोलियो में विविधीकरण होता है।
3. **नई कंपनियों में निवेश**: आपको नई व तेजी से बढ़ती कंपनियों में निवेश का अवसर मिलता है।

एसआईपी का दमदार प्रदर्शन

5 म्यूचुअल फंड ने दिया 20% से ज्यादा रिटर्न

279 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से 276 ने पॉजिटिव रिटर्न दिया

म्यूचुअल फंड में निवेश करने वालों के कमाया बढ़िया मुनाफा

बिजनेस डेस्क

पिछले एक साल में इक्विटी म्यूचुअल फंड्स ने निवेशकों को मालामाल कर दिया है। पिछले साल यानी 2024 की दिवाली से लेकर अब तक 279 इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में से 276 फंड्स ने पॉजिटिव रिटर्न दिया। यानी इनमें निवेश करने वाले निवेशकों को मुनाफा हुआ। वहीं, सिर्फ तीन फंड्स ऐसे रहे जिन्होंने निवेशकों को नुकसान पहुंचाया। सबसे खास बात यह है कि 10 ऐसे इक्विटी म्यूचुअल फंड्स हैं जिन्होंने एसआईपी यानी एक तय रकम हर महीने निवेश करने वालों को 20% से भी ज्यादा का सालाना रिटर्न दिया है। पिछली दिवाली से लेकर अब तक एक साल में कई म्यूचुअल फंड ने निवेशकों को जबरदस्त रिटर्न दिया है। इस रिपोर्ट में हम आपको बताएंगे ऐसे ही कुछ फंडों के बारे में जो आपको अच्छा मुनाफा दे सकते हैं।

ग्रो मल्टीकैप फंड

इस लिस्ट में सबसे ऊपर ग्रो मल्टीकैप फंड का नाम है। इसने एसआईपी निवेश पर सबसे ज्यादा करीब 26% रिटर्न दिया है। इसका मतलब है कि अगर आपने इस फंड में हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी की होती, तो पिछली दिवाली से अब तक आपके निवेश की कीमत लगभग 1.10 लाख रुपये हो जाती। यानी आपके लगाए हुए पैसों से ज्यादा का मुनाफा हुआ।

इनवेस्को इंडिया मिडकैप फंड

इनवेस्को इंडिया मिडकैप फंड ने भी निवेशकों को अच्छा रिटर्न दिया है। इसने इसी अवधि में 24.69% का शानदार दिया। मिडकैप फंड्स उन कंपनियों में निवेश करते हैं जिनका मार्केट कैप मीडियम होता है यानी वे बहुत बड़ी भी नहीं होतीं और बहुत छोटी भी नहीं।

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के प्रकार

- **लार्ज कैप फंड्स** : ये फंड्स बड़ी मार्केट कैपिटलाइजेशन वाली कंपनियों में निवेश करते हैं।
- **मिड कैप फंड्स** : ये फंड्स मध्यम आकार की कंपनियों में निवेश करते हैं।
- **स्मॉल कैप फंड्स** : ये फंड्स छोटी कंपनियों में निवेश करते हैं।
- **मल्टीकैप फंड्स** : ये फंड्स विभिन्न मार्केट कैपिटलाइजेशन वाली कंपनियों में निवेश करते हैं।
- **फोकस्ड फंड्स** : ये फंड्स सीमित संख्या में शेयरों में निवेश करते हैं।
- **सेक्टोरल फंड्स** : ये फंड्स विशिष्ट क्षेत्रों में निवेश करते हैं।

इक्विटी म्यूचुअल फंड्स के लाभ

- **विविधीकरण** : इक्विटी म्यूचुअल फंड्स विभिन्न शेयरों में निवेश करते हैं, जिससे जोखिम कम होता है।
- **पेशेवर प्रबंधन** : फंड मैनेजर द्वारा प्रबंधन किया जाता है, जो निवेश के निर्णय लेते हैं।
- **लिक्विडिटी** : इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में निवेश आसानी से निकाला जा सकता है।
- **कर लाभ** : इक्विटी म्यूचुअल फंड्स पर कर लाभ उपलब्ध हो सकता है।

निवेश से पहले विचार करने योग्य बातें

- **जोखिम सहनशक्ति** : इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में जोखिम होता है, इसलिए निवेश से पहले अपनी जोखिम सहनशक्ति का मूल्यांकन करें।
- **निवेश अवधि** : इक्विटी म्यूचुअल फंड्स में निवेश लंबी अवधि के लिए करना चाहिए।
- **विविधीकरण** : अपने पोर्टफोलियो को विविध बनाने के लिए विभिन्न प्रकार के फंड्स में निवेश करें।

हेलिओस लार्ज एंड मिड कैप फंड

हेलिओस लार्ज एंड मिड कैप फंड और आईसीआईसीआई प्रू फ्लेक्सीकैप फंड ने भी निवेशकों को निराश नहीं किया। इन्होंने क्रमश 23.82% और 23.22% का एक्सआईआरआर दिया। फ्लेक्सीकैप फंड्स की खासियत यह होती है कि फंड मैनेजर किसी भी साइज की कंपनी में निवेश करने के लिए स्वतंत्र होते हैं, चाहे वह लार्ज-कैप हो, मिड-कैप हो या स्मॉल-कैप।

मोतीलाल ओसवाल लार्ज एंड मिडकैप फंड

मोतीलाल ओसवाल लार्ज एंड मिडकैप फंड ने 22.33% का एक्सआईआरआर दिया। इस फंड में अगर किसी ने हर महीने 10,000 रुपये की एसआईपी की होती, तो आज उसके निवेश की कीमत लगभग 1.33 लाख रुपये हो जाती। यह दिखाता है कि एसआईपी के जरिए लंबी अवधि में कैसे अच्छी खासी रकम जमा की जा सकती है।

कोटक फोकस्ड फंड

कोटक फोकस्ड फंड ने भी 22.06% का एक्सआईआरआर दर्ज किया। फोकस्ड फंड्स में फंड मैनेजर कुछ चुनिंदा स्टॉक्स में ही निवेश करते हैं, जिससे उनका फोकस बना रहता है। इनके अलावा मीरा एसेट मिडकैप फंड ने 20.55% का एक्सआईआरआर दिया। इसके बाद आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल म्यूचुअल फंड के दो फंड्स ने भी 20% के आंकड़े को पार किया।

उम्र के हिसाब से करें प्लानिंग, 20 में रिस्क 30 में बैलेंस और 40 साल में ग्रोथ जरूरी

निवेश की ऐसे प्लानिंग करेंगे तो भविष्य में कभी नहीं होगी पैसों की टेंशन

उम्र का हर दशक अपनी अलग-अलग जिम्मेदारियां और मौके लेकर आता है

20 साल की उम्र रिस्क लेने का समय होता है, काम करने की क्षमता अधिक होती

30 साल की उम्र में बैलेंस और 40 साल की उम्र में ग्रोथ पर फोकस जरूरी होता है

अगर आप भी निवेश कर रहे हैं या अपनी निवेश यात्रा करना चाहते हैं तो अपने लक्ष्य, परिवार, इनकम और बच्चों की की स्थित को देखकर ही निवेश यात्रा शुरू करें। बेहतर प्लानिंग के साथ निवेश करेंगे तो भविष्य में आसानी होगी और आर्थिक रूप से संपन्न रहेंगे। कहते हैं उम्र का हर दशक अपनी अलग-अलग जिम्मेदारियां और मौके लेकर आता है। 20 साल की उम्र में जहां रिस्क लेने का समय होता है, काम करने की क्षमता अधिक होती है, वहीं 30 साल की उम्र में बैलेंस और 40 साल की उम्र में ग्रोथ पर फोकस जरूरी होता है। अगर आप उम्र के हिसाब से सही फाइनेंशियल प्लानिंग करते हैं, तो न सिर्फ रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड बना सकते हैं, बल्कि जिंदगी भर पैसों की चिंता से भी दूर रह सकते हैं। आज के वक्त में फाइनेंशियल सिक्योरिटी सिर्फ जरूरत नहीं, बल्कि एक आदत बननी चाहिए। ताकि आर्थिक रूप से परेशान न हों और भविष्य हर तरह से बढ़िया रहे। हम सब मेहनत तो करते हैं, लेकिन कमाई का सही इस्तेमाल तभी होता है जब उसके पीछे एक सटीक फाइनेंशियल प्लान हो। बहुत से लोग कहते हैं कि पैसे बचाने की शुरुआत बाद में करेंगे, लेकिन सच्चाई यह है कि जितनी जल्दी प्लानिंग शुरू करेंगे, उतना मजबूत होगा आपका फ्यूचर हर दशक अपने साथ नई जिम्मेदारियां और अवसर लेकर आता है। 20 साल की उम्र में में जहां रिस्क लेने का समय होता है, वहीं 30 साल की उम्र में में जिम्मेदारियों और इन्वेस्टमेंट में बैलेंस बनाना जरूरी होता है। साल की उम्र में आते-आते सेफ्टी और ग्रोथ पर फोकस करना समझदारी बन जाती है। अगर आप उम्र के हिसाब से फाइनेंशियल फैसले लेते हैं, तो न सिर्फ एक मजबूत रिटायरमेंट फंड बना सकते हैं, बल्कि जिंदगी भर पैसों की चिंता से आजादी भी पा सकते हैं।

बजट बनाना सीखें

अपनी कमाई और खर्च का हिसाब रखें। 80/20 का नियम अपनाएं यानी 80% खर्च और 20% बचत या निवेश। इससे आपको अपने पैसों का फ्लो समझ आएगा और आप बेवजह खर्चों को कंट्रोल कर पाएंगे।

इमरजेंसी फंड बनाएं

हर महीने के खर्च का 3 से 6 महीने तक का फंड अलग रखें। जैसे अगर आपका खर्च 25,000 रुपये महीना है, तो कम से कम 75,000-1,50,000 रुपये का इमरजेंसी फंड जरूर होना चाहिए, ताकि किसी भी परेशानी के समय यह काम आ सके और आपको किसी के मुह की ओर न देखना पड़े।

इंश्योरेंस लेना न भूलें

कम उम्र में प्रीमियम सस्ता होता है। हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस दोनों लें, ताकि मेडिकल और लाइफ रिस्क से सुरक्षा बनी रहे। कोई भी परेशानी आने पर परिवार पर अतिरिक्त दबाव न पड़े।

जल्दी निवेश शुरू करें

कम्पाउंडिंग की ताकत का फायदा तभी मिलता है जब शुरुआत जल्दी की जाए। एसआई और पीपीएफ जैसी स्कीम में निवेश कर सकते हैं। इसमें निवेश सुरक्षित है और महंगाई को मात देना वा रिटर्न भी मिलता है।

जानकारी
बिजनेस डेस्क

30 साल की उम्र जिम्मेदारियों व निवेश में बैलेंस का समय

इस दशक में शादी, बच्चों की पढ़ाई और घर की प्लानिंग जैसी जिम्मेदारियां बढ़ जाती हैं। ऐसे में बैलेंस बनाना जरूरी हो जाता है।

फाइनेंशियल गोल्स अपडेट करें

बच्चों की पढ़ाई, घर खरीदने या रिटायरमेंट जैसे लक्ष्यों को री-इवैल्यूएट करें। हर 2 साल में अपने पोर्टफोलियो की समीक्षा करें।

एसआईपी बढ़ाते रहें

सैलरी बढ़ने के साथ हर साल अपनी एसआईपीमें 10-15% इजाफा करें. कोशिश करें कि इनकम का 30-40% निवेश में लगाएं।

एसेट एलोकेशन पर ध्यान दें

40% इक्विटी, 40% डेट और 20% गोल्ड या पीपीएफ जैसे सुरक्षित निवेश रखें। इससे रिस्क और रिटर्न में सही संतुलन बना रहेगा।

एनपीएस में निवेश करें

नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) टैक्स छूट देता है और रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड तैयार करता है।

कर्ज चुकाने की योजना बनाएं

अगर कोई लोन है, खासकर हाई इंटरेस्ट वाला, तो उसे पहले खत्म करें। ईएमआई के बोझ को घटाना फाइनेंशियल फ्रीडम की दिशा में बड़ा कदम है।

40 साल की उम्रः ग्रोथ और सुरक्षा पर फोकस करने का दशक

अब आपकी कमाई चरम पर होती है, लेकिन रिटायरमेंट भी ज्यादा दूर नहीं होता। इसलिए रिस्क घटाकर ग्रोथ और सुरक्षा पर फोकस करें।

रिटायरमेंट फंड का आकलन करें

महंगाई को ध्यान में रखते हुए अपने सालाना खर्च का 50 गुना फंड बनाना लक्ष्य रखें. उदाहरण के लिए, अगर आपका मासिक खर्च 50,000 रुपये है, तो रिटायरमेंट कॉर्पस करीब 3 करोड़ रुपये होना चाहिए।

रिस्क कम करें, सुरक्षा बढ़ाएं

धीरे-धीरे इक्विटी से पैसा निकालकर डेट फंड्स, बॉन्ड्स या फिक्स्ड इनकम ऑप्शंस में डालें।

इंश्योरेंस कवरेज जांचें

सुनिश्चित करें कि हेल्थ और टर्म इंश्योरेंस आज की जरूरतों के हिसाब से पर्याप्त हैं।

कर्ज मुक्त होने का लक्ष्य रखें

रिटायरमेंट से पहले घर या कार जैसे बड़े लोन पूरी तरह चुका दें। इससे आपकी भविष्य की इनकम पर बोझ नहीं पड़ेगा।

अधूरे दस्तावेज या अधूरी जानकारी के साथ निवेश की शुरुआत नहीं हो सकेगी

म्यूचुअल फंड निवेश प्रक्रिया में हो रहे हैं अहम बदलाव, निवेशकों पर क्या होगा असर

अभी तक कई मामलों में अकाउंट केवाईसी प्रक्रिया पूरी होने से पहले ही खुल जाता था

अब से पहले, म्यूचुअल फंड्स के निवेशकों को अपने निवेश के रिस्क पैरामीटर्स की जानकारी महीने के अंत में मिलती थी, यह जानकारी हर महीने के 15 दिन के भीतर उपलब्ध होगी।

एक बार फिर म्यूचुअल फंड प्रक्रिया में बदलाव हो रहे हैं। इसका निवेशकों पर भी असर पड़ना स्वाभाविक है। इसके कुछ फायदे होंगे तो कुछ नुकसान भी निवेशकों को भुगतने पड़ सकते हैं। इसलिए जरूरी है कि आप भी निवेशक हैं या निवेश यात्रा शुरू करने जा रहे हैं तो आप अलर्ट हो जाएं और सभी दस्तावेजों को जांचके के बाद ही निवेश यात्रा शुरू करें। बताया जा रहा है कि मार्केट रेगुलेटर सेबी द्वारा एक बार फिर म्यूचुअल फंड के नियमों में रिफॉर्म का प्रपोजल लाया गया है। सेबी ने निवेशकों और एसेट मैनेजमेंट कंपनियों (एएमसी) को हो रही दिक्कतों को कम करने के लिए नए म्यूचुअल फंड फोलियो में पहली बार किए जाने वाले निवेश (पहला ट्रांजैक्शन) की प्रक्रिया को एक जैसा (स्टैंडर्ड) बनाने का प्रस्ताव दिया है। सेबी ने प्रस्ताव रखा है कि अब म्यूचुअल फंड अकाउंट केवल तब ही खोले जा सकेंगे जब निवेशक की केवाईसी प्रक्रिया पूरी तरह से सत्यापित हो जाएगी। हलांकि सेबी की तरफ से की जा रही इस कार्यवाही से निवेशकों को लाभ ही होगा और वे किसी भी तरह के फर्जीवाड़े से बच सकेंगे।

निवेशकों के हितों के लिए जरूरी

असल में मार्केट रेगुलेटर सेबी द्वारा समय समय पर म्यूचुअल फंड के नियमों में कुछ न कुछ बदलाव किया जाता है, ताकि निवेशकों का हित बना रहे, साथ ही एसेट मैनेजमेंट कंपनियों को भी आसानी हो। बीते कुछ सालों में म्यूचुअल फंड इंडस्ट्री का लोकप्रियता निवेशकों के बीच बहुत ज्यादा बढ़ी है। इंडस्ट्री का कुल एयूएम 75 लाख करोड़ रुपये से ज्यादा हो गया है। ऐसे में सेबी समय समय पर यह ध्यान रखती है कि नियमों में कुछ बदलाव किया जाए या रिफॉर्म किया जाए। बीते कुछ महीनों में सेबी ने कुछ बदलाव या रिफॉर्म किए हैं और आगे के लिए भी कुछ प्रपोजल है। ये निवेशकों को म्यूचुअल फंड में निवेश के दौरान बड़ी राहत देने का काम करेंगे। आप भी निवेश करने जा रहे हैं अपने दस्तावेजों को साथ रख लें।

सेबी म्यूचुअल फंड के नियमों में रिफॉर्म का प्रपोजल लाया, सभी दस्तावेज देने होंगे

नए प्रपोजल के क्या हैं मायने

अब अधूरे दस्तावेज़ या अधूरी जानकारी के साथ निवेश की शुरुआत नहीं की जा सकेगी। अभी की बात करें तो कई मामलों में निवेशक का अकाउंट केवाईसी प्रक्रिया पूरी होने से पहले ही खुल जाता है, जिससे आगे चलकर उन्हें ट्रांजेक्शन, रिडेम्प्शन और डिविडेंड पाने में परेशानी होती है। इसी को रोकने के लिए सेबी यह नया सिस्टम लागू करने जा रहा है। नया सिस्टम लागू होने के बाद पूरी पारदर्शिता के साथ लोग निवेश कर पाएंगे और अपने निवेश को सुरक्षित भी रख सकेंगे। जब एमएएसी (एसेट मैनेजमेंट कंपनी) को अकाउंट खोलने के लिए जरूरी दस्तावेज मिल जाएं और केवाईसी प्रक्रिया पूरी हो जाए, तभी नया फोलियो बनाया जाएगा। केवाईसी पूरी होने के बाद, एएमसी कंपनी इन दस्तावेजों को केवाईसी रजिस्ट्रेशन एजेंसी (केआर) को भेजेगी, जो केवाईसी की अंतिम जांच करेगी।

डिस्क्लोजर नियमों में बदलाव

एएफएफआई और सेबी ने छोटे निवेशकों की सुरक्षा के लिए डिस्क्लोजर नियमों में बदलाव किया है। निवेशकों को अपने निवेश के लिए अधिक स्पष्ट और विस्तृत जानकारी प्राप्त करने का अधिकार होगा। यह नियम निवेशकों को उनके निवेश के लिए सही और समय पर जानकारी प्राप्त करने में मदद करेगा।

कट-ऑफ टाइम में बदलाव

इस साल सेबी ने ओवरनाइट म्यूचुअल फंड स्कीम्स के लिए कट-ऑफ टाइम में बदलाव किया है। 1 जून 2025 से ऑफलाइन लेनदेन का समय दोपहर 3 बजे तक हो गया है। ऑनलाइन लेनदेन का समय शाम 7 बजे तक है। इन समयों के बाद किए गए लेनदेन अगले कारोबारी दिन प्रोसेस होंगे, जिससे एनएवी (नेट एसेट वैल्यू) बदल सकती है। बदलाव प्लेजिंग (गिरवी रखने) की प्रक्रिया को आसान बनाने के लिए किया गया है।

एनएफओ को लेकर क्या बदलाव

एसेट मैनेजमेंट कंपनियों को न्यू फंड ऑफर (एनएफओ) से जुटाए गए पैसों को तय समय में निवेश करना होगा। अगर वे ऐसा नहीं करते, तो निवेशक बिना एग्जिट लोड दिए अपना पैसा निकाल सकते हैं। यह नियम एएमसी को जरूरत से ज्यादा पैसा जुटाने से रोकेगा और सही जगह निवेश सुनिश्चित करेगा। इसके लिए 30 दिन का समय निर्धारित है।

स्ट्रेस टेस्ट के नतीजे बताने होंगे

म्यूचुअल फंड स्कीम्स को स्ट्रेस टेस्ट के नतीजे बताने होंगे, ताकि निवेशकों को स्कीम की वित्तीय स्थिति का सही अंदाजा हो सके। एएमसी कर्मचारियों की सैलरी का कुछ हिस्सा म्यूचुअल फंड स्कीम्स में लगाया जाएगा। कितना पैसा और किन स्कीम्स में निवेश होगा, यह उनकी भूमिका पर निर्भर करेगा। इससे कर्मचारियों और निवेशकों का हित एक जैसा होगा।

खबर संक्षेप

कोहरे में सुरक्षा को लेकर चलाया जागरूकता अभियान

बहादुरगढ़। डीजीपी हरियाणा ओम प्रकाश सिंह के दिशा-निर्देशन और पुलिस कमिश्नर डॉ. राजश्री सिंह के मार्गदर्शन में यातायात पुलिस ने सर्दियों के मौसम में बढ़ती सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम के लिए केएमपी पर विशेष जागरूकता अभियान चलाया। इस अभियान का नेतृत्व केएमपी प्रबंधक नरेश सिंधु ने किया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य कोहरे और धुंध के दौरान सड़क सुरक्षा के प्रति ड्राइवरों और आमजन को सचेत करना रहा। इस अवसर पर नामी हास्य कलाकार रामवीर ने यातायात नियमों पर प्रस्तुति देकर उपस्थित लोगों को जागरूक किया। पुलिस कमिश्नर डॉ. राजश्री सिंह ने कहा कि इस तरह के रचनात्मक प्रयास समाज में यातायात अनुशासन और सुरक्षा के प्रति सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक हैं।

न्यूनतम वेतन में मामूली वृद्धि की निंदा

बहादुरगढ़। मजदूर कल्याण मंच ने श्रमिकों की न्यूनतम मजदूरी दर में मामूली वृद्धि को लेकर हरियाणा सरकार की कड़ी आलोचना करते हुए कहा सरकार मालिकों के हित में काम कर रही है। मंच के जिला सचिव सतीश कुमार ने बताया कि हरियाणा सरकार ने प्रदेश के 20 लाख से ज्यादा श्रमिकों की न्यूनतम मजदूरी दर में 0.23 प्रतिशत की मामूली बढ़ोतरी की है। यह पिछले 10 साल में सबसे कम है। इस हिसाब से श्रमिकों की मजदूरी में मासिक 17.48 रुपये से लेकर 22.31 रुपए तक की बढ़ोतरी होगी। यह श्रमिकों के साथ अन्याय है। भाजपा सरकार मौजूदा 29 श्रम कानूनों को रद्द कर 4 लेबर कोड लागू करना चाह रही है।

16 को नारनौल में मनेगी शुरसैनी जयंती

बहादुरगढ़। सैली सभा द्वारा 16 नवंबर को नारनौल में प्रदेश स्तरीय महाराजा शुरसैनी जयंती का आयोजन होगा। इसमें मुख्यअतिथि के तौर पर मुख्यमंत्री नायब सैनी शिरकत करेंगे। समाज के प्रधान जसबीर सैनी ने कहा कि सैनी समाज के संस्थापक महाराजा शुरसैनी की प्रदेश स्तरीय जयंती समारोह को लेकर उत्साह का माहौल है। नायब सरकार सभी महापुरुषों की जयंती प्रदेश स्तर पर मना रही है। इस अवसर पर अतरे मिस्त्री, गौरव प्रधान, रोहित प्रधान, सुभाष सैनी, रामकुमार सैनी, विनोद सैनी, रामफल पांचाल, राजकपूर पांचाल, पुनीत सैनी, धर्मवीर सैनी, राजू सैनी, फूलकंवार सैनी, राजेश सैनी, नीरज सैनी व ललित सैनी आदि मौजूद रहे।

नायब के नेतृत्व में हो रहा अभूतपूर्व विकास

बहादुरगढ़। वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. पंकज जैन ने कहा कि सीएम नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व में हरियाणा प्रदेश विकास के नए आयाम स्थापित कर रहा है। भाजपा राज में प्रदेश ने शिक्षा, चिकित्सा, उद्योग, रोजगार और खेल सहित हर क्षेत्र में अभूतपूर्व तरक्की की है। जैन ने कहा कि यदि हरियाणा बनने के बाद से अब तक की सरकारों की तुलना की जाए तो भाजपा शासन के पिछले 11 वर्ष विकास के मामले में सबसे आगे रहे हैं। सीएम नायब सिंह सैनी देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की नीतियों से प्रेरणा लेकर सबका साथ, सबका विकास और सबका विश्वास के संकल्प को धरातल पर साकार कर रहे हैं।

चोरी की वारदात मंदिर में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई

पांडुशिला से चांदी का छतर, कलश सिंहासन व दानराशि चुरा ले गया चोर

दो बजकर 56 मिनट पर वह अंदर दाखिल होता है और कुछ ही समय में वारदात कर निकल जाता है

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

शहर की अनाज मंडी में स्थित भगवान पार्श्वनाथ मंदिर पांडुशिला में चोरी की वारदात हो गई। अज्ञात चोर शीशा तोड़कर अंदर दाखिल हुआ और लाखों रुपये के चांदी के छतर, कलश व दानराशि पर हाथ साफ कर गया। चोरी की वारदात मंदिर में लगे सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गई है। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है। वारदात रात करीब तीन बजे हुई है। सीसीटीवी फुटेज में एक चोर मंदिर के अंदर चोरी करते हुए साफ नजर आ रहा है। दो बजकर 56 मिनट पर वह अंदर दाखिल होता है और कुछ ही समय में वारदात कर निकल जाता है। शनिवार की सुबह करीब छह बजे जब जैन समाज के लोग पूजा-अर्चना के लिए मंदिर पहुंचे तो उन्हें टूटा शीशा और गायब सामान देखकर चोरी का पता चला। अंदर सामान बिखरा हुआ था और दानपात्र खंगाला गया था। वारदात की सूचना मिलते ही जैन समाज के लोग मौके पर एकत्रित हो गए और पुलिस को सूचना दी। मंदिर से तीन चांदी के छतर, एक चांदी का सिंहासन, कलश और दानपात्र से दान राशि चोरी हुई है। उधर, सूचना पाकर लाइनपार थाना प्रभारी परमजीत सिंह टीम सहित मौके पर पहुंचे और जांच शुरू की। इस घटना से जैन समाज के लोगों में रोष है।

बहादुरगढ़। सीसीटीवी में नजर आ रहा चोर। फोटो : हरिभूमि

बहादुरगढ़। वारदात के बाद मौके पर मौजूद पुलिस व समाज के लोग।

जल्द वारदात सुलझाई जाएगी

प्रधान सुनील जैन, नितिन जैन, अश्विनी जैन, नरेंद्र, सुरेंद्र, अजय व पवन आदि ने कहा कि जल्द से जल्द चोर को गिरफ्तार कर वारदात सुलझाई जाए। सुरक्षा व्यवस्था मजबूत की जाए। उधर, पुलिस का कहना है कि जांच शुरू कर दी गई है। मामले की तह तक जाने के लिए फुटेज चेक की जा रही है। जल्द वारदात सुलझाई जाएगी। बता दें कि बहादुरगढ़ इलाके में बीते कुछ दिनों में कई धार्मिक स्थलों पर चोरी हो चुकी है।

किसानों की समस्याओं को लेकर इनेलो का प्रदर्शन कल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

सतपाल पहलवान, जिलाध्यक्ष इनेलो

- खेतों में जलभराव, फसलों की खरीद में धांधली व मुआवजा न मिलने के विरोध में किया जाएगा प्रदर्शन

इंडियन नेशनल लोकदल ने किसानों की समस्याओं को लेकर बड़ा आंदोलन छेड़ने की घोषणा की है। पार्टी के जिलाध्यक्ष सतपाल पहलवान ने बताया कि खेतों में जलभराव, फसलों की खरीद में धांधली और मुआवजा न मिलने के विरोध में पार्टी कार्यकर्ताओं द्वारा सोमवार को प्रदर्शन मार्च निकाला जाएगा। इनेलो कार्यकर्ता और किसान सुबह पार्टी कार्यालय में एकत्रित होंगे इसके बाद वे विरोध प्रदर्शन करते हुए लघु सचिवालय तक पहुंचेंगे। उन्होंने बताया कि प्रदर्शन मार्च के बाद डीसी को समस्याओं का समाधान करने के संदर्भ में ज्ञापन भी सौंपा जाएगा। जिलाध्यक्ष सतपाल पहलवान ने कहा कि मंडियों में धान की खरीद के दौरान नमी बताकर किसानों को न्यूनतम समर्थन मूल्य से वंचित किया जा रहा है। साथ ही सरकार ने इस बार बाजरे की सरकारी खरीद नहीं की, जिससे किसानों को निजी व्यापारियों को औने-पौने दामों पर फसल बेचनी पड़ी है। भावांतर योजना को किसानों को भ्रमित करने वाली योजना बताते हुए उन्होंने कहा कि अब तक किसी किसान के खाते में इसका भुगतान नहीं हुआ। सरकार की नीतियों से किसान त्रस्त है। इनेलो किसानों की आवाज बनकर सड़कों पर उतरेगी। ज्ञापन के माध्यम से सरकार से किसानों की समस्याओं के समाधान की मांग की जाएगी। उनकी प्रमुख मांगों में खेतों में हुए जलभराव की तुरंत निकासी, सर्वे के आधार पर फसल के नुकसान का उचित मुआवजा दिया जाना, धान की खरीद एमएसपी पर सुनिश्चित की जाए, नमी के नाम पर कटौती बंद हो तथा भावांतर योजना के अंतर्गत लंबित भुगतान तत्काल किसानों के खातों में भेजे जाने की मांग शामिल है।

कर्मचारियों को नशे के प्रति जागरूक किया

बहादुरगढ़। सड़क सुरक्षा सैल में तैनात एसआई सत्यप्रकाश ने शनिवार को जागरूकता अभियान चलाया। उन्होंने फैक्ट्रियों व सार्वजनिक स्थलों पर श्रमिकों, कामगारों को यातायात नियमों के प्रति जागरूक किया। उप निरीक्षक सत्यप्रकाश ने कहा कि अधिकांश सड़क हादसे लापरवाही, तेज रफ्तार और नशे के कारण होते हैं। उन्होंने लोगों से अपील की कि सभी वाहन चालक यातायात नियमों का पालन करें। हेलमेट और सीट बेल्ट का उपयोग अनिवार्य रूप से करें। थोड़ी सी सावधानी कई जिंदगियां बचा सकती है।

श्रद्धालुओं ने निकाली श्रीश्याम ध्वजा यात्रा

झज्जर। प्राचीन खाटू श्याम मंदिर समिति की ओर से देव उठनी एकादशी व श्याम बाबा के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में शनिवार को शहर में श्रीश्याम ध्वजा एवं रथ यात्रा निकाली गई। मंदिर के सेवक विनय तिवारी ने बताया यात्रा का शुभारंभ मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित भाजपा नेता मनीष बंसल ने किया। यात्रा के दौरान जहां श्रद्धालु हाथों में श्रीश्याम ध्वजा लिए डीजे पर बजने वाले श्याम भजनों की धुनों पर थिरकते नजर आए वहीं भगवान शिव-पार्वती की झांकी व रथ पर सवार श्रीश्याम बाबा की झांकी भी आकर्षण का केंद्र रही। यह यात्रा चौपटा बाजार, दिल्ली गेट, सिलानी गेट, यादव धर्मशाला, बीकानेर चौक, अंबेडकर चौक, मेन बाजार से होते हुए वापिस मंदिर परिसर पहुंच कर संपन्न हुई। रात्रि में श्रीश्याम संकीर्तन का आयोजन भी किया गया।

जसौरखेड़ी कॉलेज में छात्राओं ने की सफाई

बहादुरगढ़। गांव जसौरखेड़ी स्थित राजकीय महाविद्यालय में आयोजित एनएसएस कैंप के दूसरे दिन स्वयंसेविकाओं ने गतिविधियों में बढ़चढ़कर हिस्सा लिया। एनएसएस इंचार्ज श्वेता दलाल व अनिल कुमार की देखरेख में कॉलेज के खेल परिसर की सफाई करवाई गई। हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य मे स्वयंसेविकाओं ने सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस दौरान हरियाणवी संस्कृति व सभ्यता की झलक पेश की गई। स्वयंसेविकाओं को 5 वर्गों में विभाजित करके अलग-अलग कार्य सौंपा गया।

वार्षिकोत्सव में विद्यार्थियों ने दिखाई प्रतिभा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

क्षेत्र के गांव औरंगपुर स्थित सेंट मैरी सीनियर सैकेंडरी स्कूल में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया गया। समारोह में संस्था की प्रोविंशियल सुपीरियर दीपा सीजे ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत की। स्कूल मैनेजर सिस्टर डेमियन सीजे ने बताया कि समारोह में विद्यार्थियों द्वारा स्वागत गीत, लघु नाटिका सहित अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति दी। प्राचार्य सिस्टर जोसलीन सीजे ने बताया कि कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने भटके हुए बेटे की घर वापसी पर आधारित क्षमा शीर्षक नाटक की प्रस्तुति देकर दर्शकों को भाव विभोर किया। सुपीरियर सीजे दीपा ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों को निरंतर उत्कृष्टता के लिए प्रयासरत रहने और जीवन में दया व अनुशासन अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान मंच पर उपस्थित विद्यार्थी। फोटो :हरिभूमि

न्यूज डायरी

गांव लोवा खुर्द में भंडारे का आयोजन

बहादुरगढ़। शनिवार को गांव लोवा खुर्द स्थित श्री शिव मंदिर में आयोजित भंडारा आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विधायक राजेश जून ने शिरकत करते हुए क्षेत्रवासियों के सुख, शांति और समृद्धि की कामना की। यहां ग्रामवासियों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। विधायक राजेश जून ने भंडारे में प्रसाद ग्रहण किया और अपनी तरफ से 11 हजार रुपये की धनराशि मंदिर कमेटी को दान स्वरूप भेंट की। इसके अलावा शहर के ब्रिगेडियर होशियार सिंह स्टेडियम में आयोजित ओपन खेलकूद प्रतियोगिता में उन्होंने खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया और कई स्पर्धाओं का शुभारंभ किया। साथ ही आयोजकों को 5100 रुपये की धनराशि सहयोग स्वरूप भेंट की। साथ ही विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत कर उनका हौसला बढ़ाया।

शिविर में 33 युवाओं ने किया रक्तदान

झज्जर। टीम एक पहल सबका सहयोग संस्था द्वारा रोहतक रोड स्थित दीनबंधु चौधरी छोटूराम किसान धर्मशाला में रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। संस्था के सरंक्षक राम अवतार गहलावत दीपक ने बताया कि गुरु तेग बहादुर के 350वें शहीदी दिवस, देश के प्रथम गृह मंत्री लोहपुरुष सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती व हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित इस रक्तदान शिविर में 33 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। शिविर में रेड क्रॉस सचिव देवेंद्र चहल ने मुख्यातिथि के रूप में शिरकत करते हुए सभी रक्तदाताओं को बैज लगाकर व प्रशस्ति देकर सम्मानित किया। इस मौके पर संस्था प्रधान वेद, नागरिक अस्पताल ब्लड बैंक टीम से डॉक्टर रॉबिन अहलावत, नर्सिंग ऑफिसर ममता देवी, एलटी प्रीति, मीनाक्षी, विजय, रेड क्रॉस हेल्थ एजुकेटर दीपक सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

शिक्षकों को दी नई शिक्षा नीति की जानकारी

झज्जर। एलए सीनियर सैकेंडरी स्कूल में बिल्डिंग कैपेसिटी इन हाऊस प्रोग्राम की ओर से वर्कशॉप का आयोजन किया गया। वर्कशॉप का उद्देश्य शिक्षकों को नई शिक्षा नीति के तरीकों से अवगत कराना रहा। सीबीएसई रिसोर्स पर्सन डॉक्टर तरंग गौड़ ने अध्यापकों को एक नए अंदाज से बच्चों को न्यू एजुकेशन पॉलसी के अंतर्गत पढ़ाने के तरीकों की जानकारी दी। इस मौके पर स्कूल संचालक जगपाल गुलिया, जयदेव दहिया, अनीता गुलिया, नीलम दहिया व प्रबधंक केएम डागर सहित अन्य भी उपस्थित रहे।

महिलाओं को दी स्वरोजगार प्रशिक्षणों की जानकारी

झज्जर। पंजाब नेशनल बैंक ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान द्वारा क्षेत्र के गांव मातनहेल में उधमिता जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में उपस्थित स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को आरसेटी द्वारा दिए जाने वाले विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी दी गई। संस्थान निदेशक उमेश भूकर गोरिया ने बताया कि महिलाओं के उत्थान के लिए उन्हें प्रोत्साहित करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि ये समाज की प्रगति और समृद्धि के लिए आवश्यक है। संस्थान द्वारा स्वरोजगार स्थापित करने के लिए 60 तरह के अलग-अलग प्रशिक्षण दिए जा रहे है जो सभी निःशुल्क है। उन्होंने बताया कि शीघ्र ही संस्थान द्वारा जुट बैग निर्माण, कंप्यूटर एकाउंटिंग, मधुमक्खी पालन और सॉफ्ट टॉयज मेकिंग प्रशिक्षण भी शुरू किया जाएगा।

दिनभर बिजली रही गुल, बढ़ी परेशानी

झज्जर। शनिवार को कबूलपुर स्थित 400 केवी पॉवर स्टेशन में चले मेंटीनेंस कार्य के चलते शहर व निकटवर्ती गांवों की बिजली आपूर्ति व्यवस्था सुबह सवा सात बजे से दोपहर बाद तीन बजे तक बाधित रही। ऐसे में लोगों को परेशानी का सामना करना पड़ा। सुबह जब लाइट गई तो लोगों ने सोचा कि वह थोड़ी देर में आ जाएगी। जब देर तक लाइट नहीं आई तो लोगों ने बिजली निगम के शिकायत केंद्र पर फोन करने शुरू किए। इसके बाद यूएचबीवीएन द्वारा उपभोक्ताओं के लिए बनाए गए व्हाट्सअप ग्रुप में मैसेज डालते हुए दोपहर तीन बजे तक बिजली बाधित होने की जानकारी सांझा की। एसडीओ सौरभ ने बताया कि उनके पॉवर हाऊस में रोहतक जिले के कबूलपुर पॉवर हाऊस से बिजली पहुंचती है। चलाए गए मेंटीनेश कार्य के कारण सुबह सवा सात बजे से दोपहर तीन बजे तक एमरजेंसी सेवाओं को छोड़ कर शहरी व निकटवर्ती गांवों की बिजली व्यवस्था प्रभावित रही।

स्वास्थ्य जांच शिविर में 164 लोगों ने उठाया लाभ

झज्जर। बाबा प्रसादगिरी मंदिर में हरियाणा दिवस के उपलक्ष्य में स्वास्थ्य एवं नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। सर्वोदय जनहित समाज कल्याण संस्था द्वारा आयोजित इस शिविर में जहां आईक्यू अस्पताल टीम ने लोगों की नेत्रजांच की वहीं मैक्स हॉस्पिटल के चिकित्सकों द्वारा लोगों की शूगर, बीपी व अन्य बीमारियों की जांच की गई। संस्था के प्रधान प्रदीप शर्मा ने बताया कि शिविर में 164 लोगों ने लाभ उठाया। नगर परिषद के चेयरमैन जिले सिंह सैनी ने बतौर मुख्यातिथि अपने संबोधन में कहा कि लोगों को चाहिए वे समय-समय पर लगने वाले इस प्रकार के शिविरों का लाभ उठाएं। मौके पर कौशल्या वर्मा, प्रदीप मुदगिल, नरेश शर्मा, जलकारण, सूरजभान, राज सिंह सोनी, महेंद्र , अशोक, रक्षित, सबुरी, सुशील, लक्षिता शर्मा, सरोज देवी सहित अन्य मौजूद रहे।

नप चेयरमैन ने पुनर्निर्माण कार्य का किया निरीक्षण

झज्जर। शहर के रेवाड़ी रोड स्थित पंचनंद चौक के पुनर्निर्माण कार्य का निरीक्षण नगर परिषद के चेयरमैन जिले सिंह सैनी ने किया। इस दौरान उन्होंने मौके पर अधिकारियों के साथ निर्माण की प्रगति का जायजा लिया और गुणवत्ता के साथ समयबद्ध तरीके से कार्य पूरा करने के निर्देश दिए। नप चेयरमैन ने बताया कि पंचनंद चौक को शहर का आकर्षण केंद्र बनाने के लिए यहां सौंदर्यीकरण कार्य भी करवाया जा रहा है।

गीता अनुभूति शिविर के समापन पर दिखी सांस्कृतिक झलक

मंच से कलाकारों ने एक भारत श्रेष्ठ भारत का संदेश दिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बहादुरगढ़

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित श्रीमद् भगवत गीता अनुभूति शिविर के समापन अवसर पर हरियाणा की विविध सांस्कृतिक झलकी दिखी। मंच से कलाकारों ने एक भारत श्रेष्ठ भारत का संदेश दिया। मुख्य वक्ता गीता विदुषी बीके वीणा दीदी ने कहा कि एक सच्चे योगी के जीवन में संयम, स्थिरता और निःस्वार्थ सेवा की भावना ही उसके वास्तविक लक्षण हैं। उन्होंने योग के आधार, उसकी विधि और जीवन में आत्म-साक्षात्कार की महत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला।

बहादुरगढ़। मंच पर कलाकारों व अतिथियों के साथ बीके वीणा दीदी।

राज्योत्सव की हार्दिक बधाई दी

बीके सुरेंद्र कथूरिया ने राज्योत्सव की हार्दिक बधाई दी। कार्यक्रम में कर्नाटक, छत्तीसगढ़, केरल, मध्य प्रदेश आदि राज्यों के राज्योत्सवों के उपलक्ष्य में भी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गईं। इस तरह सम्पूर्ण भारत की एकता और विविधता की सुंदर झलक देखने को मिली। कार्यक्रम में सुनंदा बहन व भरत भाई ने हरियाणा की लोकसंस्कृति को दर्शाते हुए एक मधुर गीत प्रस्तुत किया। प्रितपाल, जानवी, बीके संदीप व बीके विशाल ने हरियाणवी संस्कृति पर आधारित मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए। इस अवसर पर पूर्व चेयरमैन कर्मवीर राठी, विजय कालीरमन व नवीन वाही आदि उपस्थित रहे।

खाटू श्याम के जन्मोत्सव पर निकाली शोभायात्रा

बहादुरगढ़। श्री श्याम रंगीला मंडल बहादुरगढ़ ने खाटू श्याम बाबा के जन्मोत्सव पर शहर में भव्य शोभायात्रा निकाली। शोभायात्रा का शुभारंभ लाइनपार के पंचमुखी चौक से हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में इनेलो नेता भूपेंद्र नफे सिंह राठी ने शिरकत की। उन्होंने खाटू श्याम की पूजा अर्चना की। उन्होंने कहा कि बाबा खाटू श्याम को हारे का सहारा कहते हैं। यात्रा के दौरान श्याम भक्तों ने जय श्री श्याम के जयकारे लगाकर माहौल को भक्तियम बना दिया। यह शोभा यात्रा विभिन्न मार्गों से होती हुई अनाज मंडी स्थित मंदिर में संपन्न हुई। आयोजकों की ओर से यात्रा के समापन पर भंडारे का आयोजन भी किया गया, जिसमें सैकड़ों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। इस अवसर पर काके, सुनील, पोपे, प्रदीप तंवर, एडवोकेट कृष्ण तंवर, शमशेर नरवाल, पवन पंडित, कर्ण सिंह चौहान आदि मौजूद रहे।

एचडी साल्हावास में कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम के अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन

शिक्षा क्षेत्र में माता-पिता की भूमिका से अवगत कराया

विद्यालय प्राचार्य सतबीर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित कार्यशाला में 60 शिक्षकों ने भाग लिया

हरिभूमि न्यूज ▶▶| झज्जर

एचडी साल्हावास में कैपेसिटी बिल्डिंग प्रोग्राम के अंतर्गत एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। विद्यालय प्राचार्य सतबीर सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यशाला में 60 शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यशाला में स्वामी नित्यानंद ग्रुप ऑफ स्कूल्स के प्रशिक्षक मनोज कुमार व स्कॉलर ग्लोबल स्कूल की शिक्षिका ललिता रानी ने सहज ढंग से शिक्षा में माता-पिता की भूमिका पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बच्चों की शिक्षा में माता-पिता की भागीदारी विषय पर खुलकर संवाद करते हुए कहा कि बतौर माता-पिता हमें बच्चों की रुचियों और प्रतिभाओं को समझना चाहिए। उन्हें समय-समय पर प्रोत्साहित करना और घर में पढ़ाई का माहौल बनाना चाहिए। विद्यालय की रिसोर्स पर्सन नीलम कुमारी ने बताया कि इस दौरान अनेक मनोरंजक गतिविधियों का आयोजन कर कार्यशाला को रुचिकर बनाया गया तथा खेल-खेल में शिक्षा पर विशेष ध्यान देने पर बल दिया गया। एचडी ग्रुप सचिव हेमंत गुलिया ने कहा कि यह नीति माता-पिता, अध्यापक और बच्चे के सामंजस्य पर आधारित है, जिसमें बच्चे का सर्वांगीण विकास निहित है। नई शिक्षा नीति से अंतिम पंक्ति के बच्चे को भी आगे बढ़ने का मौका मिलेगा। इस मौके पर एचडी ग्रुप डायरेक्टर रमेश गुलिया और सचिव विशाल नेहरा ने भी शिक्षा में माता-पिता की भूमिका पर अपने-अपने मनोभावों को व्यक्त किया।

झज्जर। कार्यशाला के दौरान प्रशिक्षकों के साथ उपस्थित शिक्षक। फोटो :हरिभूमि

खबर संक्षेप

बहादुरगढ़। एमडीयू की घटना की निंदा करते पूर्व विधायक राजेंद्र जून।

एमडीयू की घटना शर्मनाक : राजेंद्र जून

बहादुरगढ़। पूर्व विधायक राजेंद्र सिंह जून ने रोहतक महर्षि दयानंद यूनिवर्सिटी में महिला कर्मचारियों और स्टाफ से पीरियड प्रूफ मांगने, कपड़े उतरवाने और सैनिटरी पैड के फोटो लेने जैसी घटना को शर्मनाक बताया है। उनके अनुसार इस तरह की घटना हरियाणा की गरिमा पर चोट है। गांव लोवा खुर्द और सेक्टर-13 में आयोजित भंडारों में शिरकत करते हुए राजेंद्र जून ने कहा कि यह घटना स्त्री सम्मान और मानवाधिकारों का खुला उल्लंघन है। यह अमानवीय व्यवहार स्वीकार नहीं किया जा सकता। सभी की जवाबदेही तय होनी चाहिए। दोषियों पर तुरंत एफआईआर दर्ज कर कठोरतम सजा देनी चाहिए।

अवैध हथियार सहित युवक गिरफ्तार

बहादुरगढ़। पुलिस की एंटी नारकोटिक्स सैल ने अवैध हथियार सहित एक युवक को गिरफ्तार किया है। आरोपी के खिलाफ बादली थाने में केस दर्ज किया गया है। बीती रात को पुलिस ने इस कार्रवाई को अंजाम दिया। दरअसल, एएनसी में तैनात एएसआई मनोज कुमार की वाली अगुवाई टीम को सूचना मिली कि बादली-बुपनिया रोड पर बाईपास चौक के निकट एक युवक हथियार लेकर खड़ा है। इस सूचना पर टीम वहां गई और एक युवक को काबू किया। तलाशी लेने पर आरोपी के पास देशी पिस्तौल और एक कारतूस बरामद हुआ। आरोपी की पहचान सक्षम निवासी बादली के रूप में हुई। जांच अधिकारी मनोज कुमार ने बताया कि आरोपी को अदालत में पेश कर न्यायिक हिरासत में भेज दिया गया है।

हादसे में घायल ने पीजीआई में दम तोड़ा

बहादुरगढ़। वेस्ट जुआं ड्रेन रोड पर सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हुए आसौदा निवासी जयप्रकाश ने पीजीआई रोहतक में दम तोड़ दिया। सेक्टर-6 थाना पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करा दिया है। दरअसल, जयप्रकाश पेशे से दूध सप्लायर था। कुछ दिन पहले वह दूध सप्लाई करने बहादुरगढ़ आ रहा था। सांखोल के निकट जब वेस्ट जुआं ड्रेन रोड पर पहुंचा तो एक बाइक के साथ उसकी बाइक की टक्कर हो गई। इस हादसे में उसके सिर में गंभीर चोट आई। उसे अस्पताल में ले जाया गया। तब से ईलाज जारी था। शुक्रवार को पीजीआई रोहतक में उसने दम तोड़ दिया। सूचना पाकर सेक्टर-6 थाने से पुलिस पीजीआई गई और शव का पोस्टमार्टम कराया। इस संबंध में प्लेटिना बाइक चालक पर केस दर्ज है।

झज्जर की धरती शौर्य, संस्कृति और खेल प्रतिभा का प्रतीक

हरियाणा दिवस पर सजी लोक-कला, शौर्य और प्रगति की छटा, विद्यार्थियों ने बिखेरे संस्कृति के रंग

हरियाणा प्रदेश का 60वां स्थापना दिवस जिला स्तर पर प्रदेश की संस्कृति से ओतप्रोत प्रस्तुतियों के साथ धूमधाम से राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय सभागार में मनाया गया। हरियाणा वह स्थली है, जहां श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि पर अर्जुन को गीता का उपदेश दिया।

हरिभूमि न्यूज ▶▶ झज्जर

हरियाणा प्रदेश का 60वां स्थापना दिवस जिला स्तर पर शनिवार को प्रदेश की संस्कृति से ओतप्रोत प्रस्तुतियों के साथ धूमधाम से राजकीय स्नातकोत्तर नेहरू महाविद्यालय सभागार में मनाया गया। जिसमें सांस्कृतिक उत्सव में युवाओं, महिलाओं, खिलाड़ियों, विद्यार्थियों, उद्यमियों सहित हर वर्ग के लोगों की सक्रिय भागीदारी रही। डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल, भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मीकि, जिप चेयरमैन कप्तान सिंह बिरधाना, नप चेयरमैन जिले सिंह सैनी, संजय कबलाना सहित प्रसिद्ध कलाकार, अर्जुन अवार्डी खिलाड़ी,कोच उद्यमियों सहित अन्य भी मौजूद रहे। इस दौरान अपने संबोधन में डीसी स्वप्निल रविंद्र पाटिल ने कहा कि आज का यह अवसर केवल उत्सव नहीं, बल्कि हमारी गौरवशाली विरासत, मेहनत, परंपरा और प्रगति का प्रतीक है, जिसने हरियाणा को हर क्षेत्र में अग्रणी बनाया है।

■ भूमि अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाड़यों की जननी रही

उन्होंने कहा कि हरियाणा वह भूमि है, जहां भगवान श्रीकृष्ण ने कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि पर अर्जुन को गीता का उपदेश दिया। यह वही प्रदेश है जहां से धर्म, नैतिकता, पराक्रम और त्याग का संदेश पूरे विश्व में प्रसारित हुआ। उन्होंने कहा कि झज्जर जिला हरियाणा की खेल शक्ति, शौर्य, संस्कृति और कृषि का जीवंत प्रतीक है। यह भूमि अंतरराष्ट्रीय स्तर के खिलाडियों की जननी रही है। मनु भाकर, अमन सहरावत, पहलवान बजरंग पुनिया, धर्मेंद्र दलाल, पलक गुलिया, योगेश कथुनिया जैसे अनगिनत खिलाडियों ने झज्जर का नाम देश-विदेश में रोशन किया है।

झज्जर। कार्यक्रम के दौरान अपनी प्रस्तुति देतीं छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

झज्जर। विजेता प्रतिभागी प्रशासनिक अधिकारियों के साथ। फोटो : हरिभूमि

समारोह में कलाकारों ने बिखेरी हरियाणवी लोक संस्कृति की झलक

कार्यक्रम स्थल पर अतिथियों एवं नागरिकों का स्वागत बीन, नगाड़े, तुबे, ढोल और अन्य लोक वाद्य यंत्रों की मधुर ध्वनियों से किया गया। जिला स्तरीय कार्यक्रम में दर्शको ने पंचकूला से लाइव कार्यक्रम का लुत्फ उठाया, वहीं कालेज परिसर में आयोजित कार्यक्रम के जरिए कलाकारों ने हरियाणा प्रदेश की गौरवशाली परंपराओं, लोककला और संस्कृति को नई ऊर्जा के साथ प्रदर्शित किया। उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले कलाकारों, खिलाडियों, उधमियों और प्रतिभागियों को मुख्य अतिथि ने सम्मानित किया।

इन खिलाड़ियों व लोक कलाकारों का सम्मान

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जिला का नाम रोशन करने वाले खिलाड़ी अर्जुन अवार्डी धर्मेंद्र, क्रिकेट कोच नवीन कुमार, कुश्ती कोच जयवीर सिंह ,साइकिलिंग कोच शर्मिला देशवाल ,मुक्केबाजी कोच हितेश कुमार, जूडो विजेंद्र सिंह ,कोच विरेंद्र सिंह को सम्मानित किया गया। इसके अलावा जिला के ख्याति प्राप्त लोक कलाकार दीपक कपूर,जोगेंद्र कुंडू, रामवीर आर्यन, बबीता, नवीन कोच, पुष्पा, चेतना सारसर, रमेश माजरा, मंजीत बदलिया, चेतन गुलिया, निर्मल मास्टर के आदि सम्मानित किया गया।

लोगों ने चखा गुलगुले, पकोड़े, जलेबी-हलवे का स्वाद

समारोह में राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन द्वारा पारम्परिक परिधानों के अलावा स्वयं सहायता समूह की महिलाओं द्वारा पारंपरिक व्यंजनों गुलगुले,देशी घी की जलेबी,पकोड़े की स्टॉल लगाई गई,जिनपर आगंतुकों ने स्वाद का आनंद लिया। इसके अलावा कृषि एवं किसान कल्याण विभाग, इफको, आयुष, महिला एवं बाल विकास,पुलिस की साइबर सेल, रेडक्रॉस आदि विभागों की स्टालें लगाई गई।

कमलम कार्यालय में मनाया हरियाणा दिवस

झज्जर। कार्यक्रम में उपस्थित भाजपा नेता।

झज्जर । भाजपा कार्यकर्ताओं द्वारा शहर के कमलम कार्यालय में हरियाणा स्थापना दिवस उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में पार्टी पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने हरियाणा की गौरवशाली परंपरा, संस्कृति और विकास यात्रा को याद करते हुए प्रदेश के निरंतर प्रगति पथ पर आगे बढ़ने का संकल्प लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता भाजपा जिलाध्यक्ष विकास वाल्मीकि ने की। उन्होंने कहा कि हरियाणा दिवस हमारे लिए गर्व और संकल्प का अवसर है। मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी द्वारा लाड़ो लक्ष्मी योजना लागू किए जाने का निर्णय प्रदेश की बहनों के लिए एक बड़ा उपहार है। इससे महिलाएं आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण की दिशा में नई ऊंचाइयां प्राप्त करेंगी। लाडो लक्ष्मी योजना के अंतर्गत महिलाओं को 2100 रुपये की सम्मान निधि प्रदान करने वाला हरियाणा देश का पहला राज्य है। उन्होंने सरकार की पेपरलैस रजिस्ट्री प्रणाली लागू करने के निर्णय की सराहना करते हुए कहा कि यह कदम पारदर्शिता और सुशासन की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है। इस मौके पर जिला महामंत्री दया किशन जांगड़ा, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष सोमवती जाखड़, युवा मोर्चा जिलाध्यक्ष शेखर यादव, सुनीता चौहान सहित अन्य उपस्थित रहे।

फाउंडेशन ने किया शिल्पकारों का सम्मान

बहादुरगढ़। बौंदवाल परिवार को सम्मानित करते फाउंडेशन के पदाधिकारी।

बहादुरगढ़। हरियाणा दिवस पर डॉ अंबेडकर फाउंडेशन सांखोल की ओर से राष्ट्रीय पुरस्कार विजेता शिल्पकारों का सम्मान किया गया। राष्ट्रपति अवॉर्डी महावीर प्रसाद बौंदवाल, शिल्पगुरु राजेंद्र प्रसाद बौंदवाल व नेशनल अवार्डी चंद्रकांत बौंदवाल को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। कार्यक्रम में फाउंडेशन महासचिव प्रदीप तंवर, एडवोकेट कृष्ण तंवर, रणसिंह तूर, ओमप्रकाश तंवर, करण सिंह बंजारा, देवेंद्र तंवर, शमशेर नरवाल, सुजल तंवर, अशोक प्रजापत, पवन शर्मा व गीत बौंदवाल आदि उपस्थित रहे। प्रदीप तंवर ने कहा कि बौंदवाल परिवार प्रदेश का नाम देशभर में रोशन कर रहा है। यह सम्मान समाज में कला और प्रतिभा के प्रति सम्मान की भावना को मजबूत करेगा।

सांस्कृतिक एवं देशभक्ति कार्यक्रमों का आयोजन

झज्जर। स्कूल प्रबंधन समिति सदस्यों के साथ कार्यक्रम के प्रतिभागी।

झज्जर। आरपीएस स्कूल में हरियाणा दिवस पर सांस्कृतिक एवं देशभक्ति पर आधारित कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने हरियाणा की समृद्ध संस्कृति, लोकगीतों और लोकनृत्यों की मनमोहक प्रस्तुति देकर सबका मन मोहा। विद्यार्थियों ने जब देशभक्ति पर आधारित प्रस्तुति दी तो पंडाल जय हिंद व जय हरियाणा के नारों से गूंज उठा। इसके अलावा हरियाणा के इतिहास, प्रसिद्ध व्यक्तित्वों और राज्य की उपलब्धियों पर सुंदर भाषण और कविताओं की प्रस्तुति भी विद्यार्थियों द्वारा दी गई। आरपीएस स्कूल कोसली के निदेशक हंसराज यादव ने अपने संबोधन में प्रदेश के गौरवशाली इतिहास का वर्णन करते हुए कहा कि हमें अपने राज्य की संस्कृति व परंपराओं पर गर्व होना चाहिए। इस मौके पर आरपीएस ग्रुप की चेयरपर्सन पवित्रा राव, सीईओ मनीष राव, डिप्टी सीईओ कुणाल राव व प्राचार्या अंजू यादव ने विद्यार्थियों को सैदव सकारात्मक सोच रखने की प्रेरणा दी।

इस्सरहेड़ी में मकान से आभूषण व नकदी चोरी

बहादुरगढ़। गांव इस्सरहेड़ी के मार्या गार्डन में स्थित एक मकान में चोरी की वारदात हो गई। अज्ञात चोर मकान में घुसे और लाखों रुपये के आभूषणों व नकदी पर हाथ साफ कर गए। पीड़ित परिवार ने पुलिस को शिकायत दे दी है। वारदात मंतोष के मकान में हुई है। मंतोष का कहना है कि चोरी की यह वारदात गत 30 अक्टूबर को सुबह साढ़े आठ से दोपहर ढाई बजे के बीच हुई है। उस दौरान घर में कोई नहीं था। इसी दौरान चोरों ने मकान को निशाना बनाया। जब घर आए तो अंदर सामान बिखरा हुआ था। जांच करने पर हार, अंगूठी सहित सोने चांदी के काफी आभूषण गायब थे। बच्चों के आभूषणों तथा करीब 35 हजार रुपये की नकदी पर भी चोरों ने हाथ साफ कर दिया। उधर, सदर थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की।

संदिग्ध परिस्थितियों में महिला की मौत, जोहड़ में मिला शव

झज्जर। गांव बहू के जोहड़ में एक महिला का शव मिला है। मृतका की पहचान झौलरी गांव निवासी करीब 33 वर्षीया राखी पुत्री रतीराम के तौर पर हुई है। ग्रामीणों ने जब शव देखा तो उन्होंने इसकी सूचना पुलिस को दी। शुक्रवार की शाम हुई इस घटना की सूचना मिलने के बाद पुलिस ने मौके पर पहुंच कर ग्रामीणों से मामले की जानकारी लेते हुए शव को पानी से बाहर निकलवाया और उसे पोस्टमार्टम के लिए स्थानीय नागरिक अस्पताल भिजवाया। राखी की शादी चरखी दादरी जिले के गांव मांढी केहर निवासी दीपक के साथ हुई थी। बीमारी के चलते पांच-छह माह पहले दीपक की मौत हो गई। जिसके बाद राखी मानसिक रूप से परेशान थी। रेवाड़ी के निजी अस्पताल से उसका इलाज भी चल रहा था। राखी मांढी केहर ससुराल गई हुई थी। ससुरालजनों के अनुसार शुक्रवार की सुबह जब घर पर कोई नहीं था उसी दौरान घर से निकल आई। मामले के जांच अधिकारी संदीप कुमार ने बताया कि फिलहाल मृतका के भाई लीलूराम के बयान पर इत्तिफाकिया कार्रवाई करते हुए पोस्टमार्टम कराने के बाद शव परिजनों को सौंप दिया है।

पुलिस ने करवाया विकास के शव का पोस्टमार्टम

बहादुरगढ़। मेट्रो ट्रेन के आगे छलांग लगाकर जीवन लीला समाप्त करने वाले युवक के शव का पुलिस ने शनिवार को पोस्टमार्टम करा दिया। युवक द्वारा मानसिक तनाव से तंग आकर आत्महत्या करने की बात सामने आई है। दरअसल, शुक्रवार की दोपहर को बहादुरगढ़ सिटी मेट्रो स्टेशन पर एक युवक ने अचानक ट्रेन के आगे छलांग लगा दी थी। मौके पर ही उसकी मौत हो गई। जांच के दौरान मृतक की पहचान 26 वर्षीय विकास के रूप में हुई। विकास दिल्ली के नीलवाल गांव का रहने वाला था। देर शाम को परिजन बहादुरगढ़ आए तो उनके बयान लिए गए। सिटी पुलिस ने शनिवार को नागरिक अस्पताल में शव का पोस्टमार्टम करा दिया। परिजनों ने किसी तरह की कोई शंका नहीं जताई। युवक द्वारा मानसिक तनाव से तंग आकर यह कदम उठाए जाने की बात सामने आई है। बताते हैं कि वह परिवर में इकलौता पुत्र था।

चीफ कमीश्नर से मिले बीसीसीआई पदाधिकारी

बहादुरगढ़। कमीश्नर नवीन जैन से मुलाकात करते बीसीसीआई पदाधिकारी।

बहादुरगढ़। बीसीसीआई (बहादुरगढ़ चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री) के प्रतिनिधिमंडल ने चंडीगढ़ में जीएसटी एवं सेंट्रल एक्साइज हरियाणा के चीफ कमिश्नर नवीन कुमार जैन से भेंट की। बैठक में बीसीसीआई की ओर से प्रधान सुभाष जग्गा, राजेश अग्रवाल, सत्यनारायण बंसल व संजय नारंग आदि उपस्थित रहे। बैठक के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने व्यापार से संबंधित विभिन्न चुनौतियों और व्यवस्था में सुधार के लिए कई सुझाव रखे। नवीन जैन ने सभी बिंदुओं को गंभीरता से सुना और उद्यमियों को हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। प्रतिनिधिमंडल ने इस अवसर पर उन्हें बहादुरगढ़ आने का आमंत्रण भी दिया, जिसे उन्होंने सहर्ष स्वीकार किया। उन्होंने कहा कि वे शीघ्र ही बहादुरगढ़ आकर उद्योग प्रतिनिधियों से मिलेंगे और उनके सुझावों पर विस्तृत चर्चा करेंगे। उद्यमी नेताओं ने कहा कि इस संवाद से व्यापारिक माहौल में सकारात्मक बदलाव आएगा और उद्यमियों को नई दिशा एवं प्रोत्साहन मिलेगा।

स्काउट एंड गाइड शिविर की शुरुआत

झज्जर। शिविर के दौरान संबोधित करते मुख्यातिथि राजेश।

झज्जर। किड्ज शैशव, वैदिक गर्ल्स सीनियर सैकेंडरी तथा मोंटेशरी स्कूल में शनिवार को स्काउट और गाइड शिविर का शुभारंभ किया गया। डीओसी स्काउट डॉक्टर राजेंद्र ने बताया कि शिविर में जिला मुख्य आयुक्त एवं जिला शिक्षा अधिकारी राजेश कुमार मुख्यातिथि के रूप में उपस्थित रहे। डीओसी गाइड मैनावती के नेतृत्व में गाइड का बेसिक कोर्स एक नवंबर से सात नवंबर तक तथा स्काउट एंड गाइड का तृतीय सोपान शिविर तीन नवंबर से आगामी सात नवंबर तक चलेगा। शिविर के पहले दिन स्काउटिंग के मूल तत्व, सिद्धांत, विधियां, लक्ष्य, स्वरूप आदि पर प्रकाश डाला गया। इस दौरान स्काउट एवं गाइड्स ने ध्वजारोहण, ड्रिल अभ्यास, प्राथमिक उपचार, प्रशिक्षण, गांठ बांधना, बिना आग के भोजन बनाना तथा पर्यावरण संरक्षण जागरुकता अभियान आदि गतिविधियों में भाग लिया। प्राचार्या उषा गहलौत ने बताया कि शिविर का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों में अनुशासन, आत्मनिर्भरता, टीम भावना, समाज सेवा व राष्ट्रीय एकता की भावना विकसित करना है। मौके पर ट्रेनिंग टीम सदस्य प्रवीण, विनीता, सुचित्रा, प्रवीण कुमार जाखड़, कृष्ण कुमार, चांदराम सिंह मौजूद रहे।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
बहादुरगढ़ : सूरजमल वाली गली, गणपति ट्रैवलर्स के ऊपर, नजदीक टैक्सी स्टैंड, बहादुरगढ़
झज्जर :- पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, झज्जर
फोन : 8295738500, 8814999142, 8295157800, 9253681005

मृत्यु अंत नहीं है
मृत्यु कभी भी अंत नहीं हो सकती
मृत्यु एक पथ है, जीवन एक यात्रा है
आत्मा पथ प्रदर्शक है।

हरिभूमि
राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
इस शोकाकुल समय में हम आपके सहभागी हैं।
तेरहवीं/श्रद्धान्जलि/शोक संदेश
आप अर्पित कीजिये अपने श्रद्धा-सुमन हरिभूमि के माध्यम से

साईज	संस्करण	विशेष छूट राशि
5 X 8 सें.मी 10X 8 सें.मी	स्थानीय संस्करण के अन्दर के पृष्ठ पर	रु. 2500/- रु. 3000/-

+5% GST Extra
नोट : विशेष छूट राशि केवल उपरोक्त साईज पर मान्य। अन्य किसी साईज के लिए कार्ड रेट लागू।
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें
झज्जर : हरिभूमि कार्यालय, पुराना बर्फ खाना रोड, शिव चौक, फोन : 8295876400
बहादुरगढ़ : सुरजमल वाली गली, रोहतक रोड, गणपति ट्रैवल्स के ऊपर, 8295852900

विधायक राजेश जून ने प्रधान अशोक राठी की अध्यक्षता में रखी आधारशिला

परनाला में 30 लाख से बनेगी ज्योतिबा फुले धर्मशाला

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बहादुरगढ़

गांव परनाला में महात्मा ज्योतिबा फुले के नाम से करी ब30 लाख रुपए में धर्मशाला का निर्माण होगा। इस कार्य का शिलान्यास विधायक राजेश जून ने शनिवार को सरपंच पति अशोक राठी की अध्यक्षता में किया। ग्रामीणों ने इसकी सराहना करते हुए कहा कि यह सामाजिक सौहार्द और विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। ग्रामीणों ने विधायक राजेश जून का फूलमालाएं पहनाकर स्वागत किया। विधायक राजेश जून ने बताया कि ग्राम पंचायत द्वारा करीब 30 लाख रुपए की लागत से यह भव्य धर्मशाला बनाई जाएगी। यह धर्मशाला ग्रामवासियों को सामाजिक, धार्मिक व पारिवारिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए एक बेहतर स्थान होगी।

बहादुरगढ़। शनिवार को धर्मशाला की आधारशिला रखते विधायक राजेश जून व अन्य।

मौके पर यह गणमान्य रहे मौजूद

विधायक राजेश जून ने कहा कि सरकार सर्व समाज के कल्याण के कार्य कर रही है। भाजपा हर वर्ग को साथ लेकर चल रही है। उन्होंने जून महीने में बहादुरगढ़ क्षेत्र की विभिन्न समाजों की दर्जनभर धर्मशालाओं का निरीक्षण किया था और प्रत्येक धर्मशाला 10 से 15 लाख तक के विकास कार्य होंगे। उन धर्मशालाओं में सौंदर्यीकरण और सुधार कार्य शीघ्र शुरू किए जाएंगे। विधायक ने सरपंच मुकेश अशोक राठी की कार्यप्रणाली को सराहा। इस अवसर पर पूर्व पार्षद युवराज छिल्लर, भाजपा लाभार्थी प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक संजीव सैनी, जयकंवार राठी, श्याम सुंदर सैनी, जोगी मेंबर, विक्की, रामनिवास सैनी, तेजपाल, कुलबीर व मोनू आदि मौजूद रहे।

देवीलाल पार्क में 25 लाख की लागत से बनेगा आधुनिक शौचालय

बहादुरगढ़। निर्माण कार्य का शिलान्यास करते शनिवार को चेयरपर्सन सरोज राठी व अन्य। फोटो : हरिभूमि

बहादुरगढ़। नगर परिषद की ओर से ताऊ देवीलाल पार्क परिसर में करीब 25 लाख रुपये की लागत से अत्याधुनिक सार्वजनिक शौचालय का निर्माण किया जाएगा। शनिवार को नगर परिषद की चेयरपर्सन सरोज राठी ने पार्षदों और अधिकारियों की उपस्थिति में नारियल फोड़कर निर्माण कार्य का शिलान्यास किया। चेयरपर्सन सरोज राठी ने कहा कि शहर को स्वच्छ और सुविधायुक्त शहर बनाने के लिए नगर परिषद लगातार प्रयासरत है। रेलवे रोड और नाहरा-नाहरी रोड पर पहले से आधुनिक शौचालय बनाए जा चुके हैं। अब देवीलाल पार्क क्षेत्र में भी यह सुविधा उपलब्ध होगी। उन्होंने कहा कि नया शौचालय पूरी तरह आधुनिक तकनीक से सुसज्जित होगा, जिसमें दिव्यांगजनों के लिए विशेष व्यवस्था और नियमित सफाई प्रणाली सुनिश्चित की जाएगी। निर्माण कार्य दो माह में पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। जल्द ही महर्षि दयानंद पार्क, मेन बाजार और पीडब्ल्यूडी रेस्ट हाउस के पास नए सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण शुरू किया जाएगा। शिलान्यास कार्यक्रम में वाइस चेयरमैन पालेराम शर्मा, पार्षद राजेश तंवर, जेई आकाश, संदीप कुमार, मनमोहित गुप्ता, मनोज, सुरेश, पंकज, सुमित, जयपाल, राकेश, मोनू, महेश, देवेंद्र, ओमप्रकाश आदि उपस्थित रहे।

कुछ शब्दों तक सिमटी किशोर-युवाओं की बातचीत

घर, ऑफिस, कॉलेज हो या कोई पार्टी जहां कहीं भी किशोर या युवा आपस में बातचीत करते हैं, तो अधिकतर अंग्रेजी के कुछ शब्दों तक ही सिमटे रहते हैं। मातृभाषा संस्कार और क्षेत्रीयता का सोंधापन उसमें से नदारद रहता है। नई तकनीकी का हस्तक्षेप, विदेशी जीवनशैली और आधुनिकता के अंधानुकरण जैसी कई वजहें इसके लिए जिम्मेदार हैं। इससे जुड़े तमाम पहलुओं पर एक नजर।

कवर स्टोरी
लोकमित्र गौतम

एक जमाना था, जब संयुक्त परिवारों में रहने वाले बच्चे किशोरावस्था में ही ऐसे मुहावरे और कहावतें दोहराने लगते थे, जो आज के किशोरों के मुंह से सुनने को मिलें तो निश्चित रूप से आश्चर्य हो- जैसे कि 'नहले पे दहला' और 'सौ सुनार की एक लुहार की।' ये कहावतें या मुहावरे अभी एक-डेढ़ दशक पहले तक किशोरों के मुंह से सुनना आश्चर्य की बात नहीं होती थी। लेकिन अगर आज की बात करें तो किशोरों के पास अंग्रेजी के कुछ गिने-चुने शब्द ही होते हैं, जिन्हें वे आपसी संवाद के दौरान अकसर दोहराते रहते हैं। मसलन- 'ओके, रियली, यू नो, वाव और ट्रस्ट मी।' जैसे बमुश्किल एक दर्जन अंग्रेजी के शब्द हैं, जो विशेषकर आज के शहरी बच्चे अकसर आपस में बातचीत के दौरान दोहराते रहते हैं।

मातृभाषा से बढ़ती दूरी: आज पूरे भारत में सभी क्षेत्रों की मातृभाषाओं पर यह संकट देखने को मिल रहा है। आज चाहे दक्षिण भारत हो या उत्तर, मध्य हो या पश्चिम। शहरी क्षेत्र में कहीं भी बच्चे खासकर किशोर और युवा अपनी मातृभाषा के मुहावरों, कहावतों और लोकोक्तियों के इस्तेमाल में जरा भी सहज नहीं दिखते हैं।

आजकल के किशोर और नौजवान बात-बात में 'ब्रो', 'दैट्स', 'लिट' और 'रियली यार' जैसे अंग्रेजी के शब्द तो बार-बार दोहराते हैं, लेकिन उनकी रोजमर्रा की जुबान में खांटी मातृभाषा के शब्द ढूंढ़े नहीं मिलते। वास्तव में हमारी नई पीढ़ी की वोकेबलरी किसी भाषायी विकास की नहीं बल्कि दिनों-दिन बढ़ रही सांस्कृतिक दूरी की कहानी कहती है और यह दूरी उस समय से बढ़नी शुरू हुई है, जब हम सदियों की अपनी गुलाम मानसिकता के मनोवैज्ञानिक दबाव में अपनी मातृभाषा को अंग्रेजी के सामने दरिद्र मान लेते हैं और इसी भावना के चलते अपनी रोजमर्रा की बातचीत में टूटे-फूटे अंग्रेजी के शब्द बार-बार दोहराकर अपने को मॉडर्न दिखाने की कोशिश करते हैं।

मोबाइल की लत का असर: आजकल घरों में मां-बाप के साथ बोली जाने वाली मातृभाषा को किशोर और युवा आपस में बोलना ओल्ड फैशन समझते हैं। इसलिए वे हर जगह अंग्रेजी के कुछ शब्दों से काम चलाते रहते हैं। सोशल मीडिया ने विशेषकर मोबाइल की लत लगने के बाद इस आदत को और पक्का बना दिया है। वास्तव में सोशल मीडिया का कुछ वैश्विक प्रभाव नई पीढ़ी पर इस कदर पड़ा है कि अंग्रेजी के शब्द अपनी रोजमर्रा की बातचीत में बोलना ग्लैमर लगने लगा है। जबकि हम सब जानते हैं कि ये बहुतायत में इस्तेमाल हो रहे अंग्रेजी के टूटे-फूटे शब्द अपनी अभिव्यक्ति में किसी तरह की भावना नहीं जगाते बल्कि बस स्टाइल बनकर रह गए हैं।

भावनात्मक गहराई से बढ़ी दूरी: अभी एक-डेढ़ दशक पहले तक बातचीत में इस्तेमाल होने वाली कोई एक कहावत या कोई एक देसी मुहावरा हमारे दुखी और परेशान मन की सारी कहानी कह देता था। लेकिन आज बस 'मूड ऑफ' कह देने भर से काम चल जाता है। वास्तव में यह चेतावनी है कि अगर हम जल्दी चेते नहीं, तो हमारी मजबूत अभिव्यक्ति के देसी शब्द खो जाएंगे, तब हमें कहना ही नहीं, किसी के कहे हुए को समझना भी आसान नहीं होगा। आज सिर्फ कॉलेज, सोशल मीडिया में ही नहीं, दफ्तरों में भी लोगों के बीच अकसर अंगुलियों में गिने जाने वाले कुछ शब्दों से पूरी बातचीत कर लेने की कोशिश देखी जाती है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि चाहे सोशल मीडिया हो, चाहे लोगों के बीच निजी संवाद हो या सार्वजनिक बतकही ही क्यों न हो? बस थोड़े से ही शब्द हमारे इर्द-गिर्द गूंजते रहते हैं। आजकल बातचीत में जरा भी ठहराव या भावनाओं की गहराई देखने को नहीं मिलती। 'टू द प्वाइंट' कहकर लोग तेजी से सतहीपन को सही ठहराने की कोशिश करते रहते हैं।

एक जमाना था, जब लोग आपस में बातचीत में रुचि लेते थे, लेकिन आज तो बस 'रिप्लाई' करते हैं। वास्तव में यह फर्क भाषा के विकास का नहीं, मातृभाषा से बढ़ी हुई दूरी का परिचायक है। आज के किशोरों और हाल में जवान हुए कितने युवाओं के मुंह से आपने 'घर की मुर्गी दाल बराबर' या 'नाच न आवे आंगन टेढ़ा' जैसे मुहावरे-लोकोक्तियां सुनी हैं? जबकि एक-डेढ़ दशक पहले युवाओं के बीच इस तरह के मुहावरे बातचीत का हिस्सा होते थे। ये शब्द या ये मुहावरे, खालिस बातचीत नहीं होते, ये हमारे बाप-दादाओं की संस्कृति को हम तक पहुंचने का जरिया होते हैं, जो अब लगातार खत्म हो रहे हैं। आज के युवा और किशोर अगर ये शब्द, शब्दावलियां, मुहावरे तथा कहावतों से दूर हैं, तो यह दूरी यहीं तक सीमित नहीं है। इनकी यह दूरी लगातार अपनी विरासत, संस्कृति और मातृभाषा से भी हो रही है। आज की पीढ़ी 'टेकन फॉर ग्रांटेड', 'कर्मा हिट्स बैक' या 'दैट्स हाउ इट वर्क्स' जैसे विदेशी वाक्य दोहराती है, जो कि निरा कोरे शब्द होते हैं। इनमें जरा भी भावनात्मक गहराई देखने को नहीं मिलती।

शॉर्टकट्स-इमोजी का बढ़ा ट्रेंड: वास्तव में मोबाइल और इंटरनेट ने संवाद को 'फास्ट फूड' में बदल दिया है। जल्दी लिखो, जल्दी भेजो, जल्दी भूलो, यही सब देखने को मिल रहा है। अब लोग 'थैंक यू' भी पूरा नहीं लिखते बल्कि 'टीएचएक्स' लिखकर काम चलना चाहते हैं। 'क्या हाल है' की जगह अब नई पीढ़ी सिर्फ 'एसयूपी' लिखकर अपने को कूल समझती है। वास्तव में नई पीढ़ी अब इस कदर शॉर्टकट की भाषा बोल रही है कि वह अपनी आधी से ज्यादा अभिव्यक्तियों को इमोजियों के हवाले कर देती है और उनके विचार तो बस स्टेटस अपडेट तक सीमित होकर रह गए हैं। यही वजह है कि आज युवा पीढ़ी में भाषा का अभ्यास और शब्दों की संवेदना दोनो का ही घोर अभाव दिखता है।

हमारे युवाओं और किशोरों की यह नई शब्दावली, परिवार और लोक-संस्कृति के छीजने का भी परिणाम है। इसलिए हमें बहुत जल्दी सचेत हो जाना चाहिए और यह दोहरा लेना चाहिए कि भाषा का पतन शब्दों का पतन नहीं, विचारों का पतन होता है। इसलिए जितना जल्दी हो, हमें अपनी संस्कृति और सभ्यता को अगर जीवंत बनाए रखना है, तो अपनी मातृभाषा को समृद्ध बनाना होगा, सिर्फ पढ़ने के मामले में ही नहीं बल्कि रोजमर्रा के संवाद में भी। *

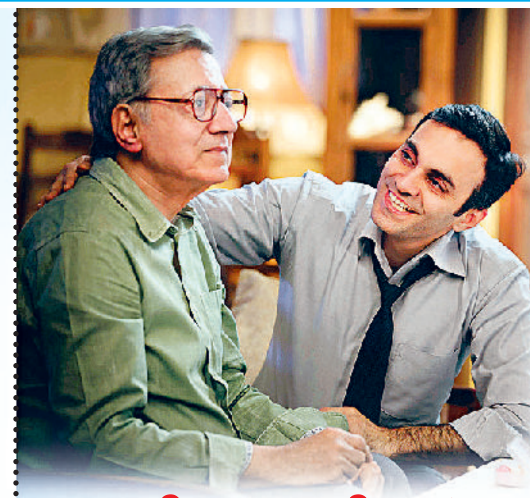

आधुनिक जीवनशैली की आपा-धापी और आर्थिक संसाधन जुटाने की जद्दोजहद में अधिकांश युवा, अपने पैरेंट्स से दूर रहने को मजबूर रहते हैं, उनकी केयर नहीं कर पाते हैं। उनको भी इस बात का मलाल होता है। ऐसे में समझदारी इसी में है कि एक संतुलन बनाते हुए अपने बुजुर्ग पैरेंट्स की देखभाल की जाए।

जीवन की सांझ में पैरेंट्स महसूस ना करें अकेलापन

दायित्व / डॉ. मोनिका शर्मा

हाल ही में दिल्ली के एक युवक की इमोशनल पोस्ट सोशल मीडिया पर काफी वायरल हुई। इस पोस्ट में लिखा गया था कि वह देर रात 3:30 बजे अस्पताल के बाहर अपनी कार में बैठा है और लगभग 36 घंटे से सोया नहीं है। उसके पिता को दिल का दौरा पड़ा है। वह हालात को संभालने की कोशिश कर रहा है। उसे यह भी अफसोस है कि वह नौकरी के कारण परिवार से दूर हो गया है। अपने माता-पिता के साथ समय नहीं बिता पाया। माता-पिता को वक्त नहीं दे पाया। एक बेटा होने में असफल रहा। युवक ने पिता को हार्ट अटैक आने के बाद दुखी मन से बाद खुद को 'नाकाम बेटा' बताया। असल में बीमारी से जूझते पिता को देख लिखी गई भावुक बातों वाली यह पोस्ट कितने ही युवाओं के लिए थोड़ा ठहरकर सोचने की बात लिए है। ये शब्द अपनों के साथ वक्त बिताने की अहमियत समझाते हैं। समय रहते अपने माता-पिता को समय देने की एक मानवीय चेतावनी सी लिए हैं।

बढ़ने लगती हैं कई चिंताएं: बच्चों की जिंदगी संवारने के लिए अपना जीवन जीना भूल जाने वाले पैरेंट्स थके शरीर और टूटते मन के इस दौर में उनका इंतजार करते रहते हैं। अकेलेपन के घेरे में आ जाते हैं। जाने कब क्या हो जाए का तनाव और सेफ्टी से जुड़ी चिंताएं उन्हें हर पल परेशान करती हैं। सेहत से जुड़ी परेशानी में बिल्कुल ही टूट जाते हैं। उलझाती मनःस्थिति वाली ऐसी बातों के चलते हालिया वर्षों में बुजुर्गों में सुसाइड का आंकड़ा भी बढ़ा है। मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी के वैज्ञानिकों के मुताबिक वृद्धावस्था में अकेलापन, बुजुर्गों की समय से पहले जान जाने का अहम कारण है। एक निश्चित उम्र के बाद इमोशनल और फिजिकल रूप से अकेलेपन को झेलना इंसान के लिए तकलीफदेह होता है। उम्रदराज लोगों के मामले में तो यह बहुत बड़ी समस्या बन गई है।

अपराधबोध तले दबता मन: यह सच है कि आज के समय में करियर बनाने और जरूरतें जुटाने में लगे युवाओं की मुश्किलें भी कम नहीं हैं। आज के कट थ्रॉट कॉम्पिटीशन में डटे रहना कुछ भी सोचने का समय नहीं देता। अपनों को भी याद करने का वक्त नहीं मिलता। इन हालातों में मन अपराधबोध का भी शिकार बनता है। नेशनल अलायंस फॉर केयर गिविंग और एएआरपी की रिपोर्ट के मुताबिक 47 प्रतिशत लोग अपने माता-पिता की चिंता में भावनात्मक रूप से टूटने लगते हैं। बड़ों के अकेले पड़ जाने की पीड़ा को बच्चों का मन भी समझता है। लेकिन काम-काजी मजबूरियों के कारण पैरेंट्स से दूर रहने वाले लोग भी जानते हैं कि उनके माता-पिता को उनकी देखभाल की जरूरत है। ऐसे में ठहराव की राह खुद ही चुननी होगी। आपा-धापी में अपने अहसासों को बचाने के लिए युवाओं को एक संतुलन तो साधना होगा।

देर ना हो जाए: अपने बुजुर्ग पैरेंट्स से जुड़े रहने के मोर्चे पर समय की टिक-टिक को सुनना भी जरूरी है। वक्त निकल जाने के बाद कुछ नहीं किया जा सकता। जिंदगी भर के लिए एक कसक मन में रह जाती है। देखा जाए तो यह एक रिश्ते को निभाने की बात भर नहीं। उम्रदराज माता-पिता की देखभाल एक मानवीय जिम्मेदारी भी है। सो दूर बैठे केवल महंगे मोल वाली चीजें भेजकर मन को तसल्ली देने के रास्ते ना निकालें। ना भूलें, जीवन की सांझ में अपने बच्चों के इमोशनल सपोर्ट की बुजुर्ग अभिभावकों को सबसे ज्यादा जरूरत होती है। इसलिए जितना अधिक संभव हो, उनके साथ वक्त गुजारें, उनका ध्यान रखें। *

अपनी बात और भावनाएं दूसरों तक पहुंचाने के लिए शब्दों की जरूरत पड़ती है। लेकिन शब्दों से भी गहन अभिव्यक्ति मौन की होती है। मौन से हमें अंतस की भी सहज अनुभूति हो जाती है।

आत्मानुभूति का द्वार मौन

आत्मचिंतन / रश्मि वैभव गर्ग

अभिव्यक्ति का सहज माध्यम हैं- शब्द। लेखन हो या जीवन शब्दों से ही अभिव्यक्त होता है। शब्दों की यात्रा ही, जीवन को गतिशील बनाए रखती है। शब्द न होते तो हम मौन को भी परिभाषित नहीं कर पाते। शब्दों की ध्वनि ही जीवन को गुंजायमान रखती है। शब्दों का अर्थ के साथ, लहजा भी हमारे भावों को दर्शाता है। वास्तव में अभिव्यक्ति के दो ही माध्यम हैं। एक तो शब्द, दूसरा भाव। शब्दों का संसार तो विस्तृत है ही, लेकिन शब्दों से परे भी एक दुनिया होती है, वो है मौन। मौन, वो भी व्यक्त कर देता है, जो शब्द भी व्यक्त नहीं कर पाते हैं।

अव्यक्त को करता है व्यक्त: मौन एक साधना है। इसके विविध रूप हैं। मौन कभी शब्दों का विराम है तो कभी भावों की गहन अभिव्यक्ति है। कभी मौन रोष अभिव्यक्त करता है, तो कभी अगाध प्रेम की अभिव्यक्ति। मौन कभी शब्दों की विवशता भी प्रकट करता है। कभी-कभी शब्द हमारी अनुभूति को व्यक्त ही नहीं कर पाते, उसे मौन व्यक्त कर देता है। शब्द, भावों की गूंज है तो मौन भावों की मूक अभिव्यक्ति है। किसी ने क्या खूब कहा है कि स्पीच इज सिल्वर, साइलेंस इज गोल्ड। सचमुच बोलना चांदी के समान है तो चुप रहना स्वर्ण के तुल्य। कभी ऐसा भी होता कि हम कुछ बोलना चाहते हैं, लेकिन किसी कारणवश बोल नहीं पाते हैं, फिर सोचते हैं कि न बोलना ही श्रेयष्कर रहा।

आत्मसंयम का परिचायक: मौन, अभिव्यक्ति का श्रेष्ठतम माध्यम है। बशर्ते कोई समझने वाला हो। सामाजिक जीवन में संवादरहित अभिव्यक्ति एक गहरा प्रभाव छोड़ती है। चुप रहना भी एक विजय है। अपने शब्दों को विराम देना एक आत्मसंयम है। इस आत्मसंयम को आत्मसात करना हमारी जीत है। बाहरी मौन का संयम रखते हुए, आंतरिक मौन साधना को पाना जीवन दर्शन है। बाहरी मौन जीवन का आनंद है, आंतरिक मौन आत्मा का आनंद है। शब्दों का मौन लौकिक रंग है, आंतरिक मौन, आलौकिक रंग है। आंतरिक मौन यानी सब इच्छाओं की समाप्ति। जो अत्यंत दुष्कर है, लेकिन दुरूह नहीं। आंतरिक मौन जीवन को पूर्ण कर देता है। उतना ही पूर्ण जितना ईश्वर। तृष्णाओं की समाप्ति ही ईश्वर से मिलने का द्वार खोलती है। स्वयं से साक्षात्कार ही ईश्वर से मिलना है, वो तब ही संभव है, जब हम बाहरी व्यक्ति और वस्तुओं को विराम दें, और आंतरिक मौन को धारण करें।

मिलता है आलौकिक आनंद: हर इंसान के अंदर आध्यात्मिक अनुभूति होती है। जैसे पानी में कंकड़ फेंकते हैं तो लहर उठती है, वैसे ही हर आत्मा में अध्यात्म की चेतना होती है, क्योंकि चेतन का स्वभाव ही आत्मतत्व की खोज है। जिसका क्षणिक आभास हम जब-तब करते रहते हैं, लेकिन जब यह आत्मतत्व चिरस्थाई हो जाता है, तो असल आनंद प्राप्त होता है। बाहरी क्रियाएं विचलित करती हैं। आंतरिक मौन, लोक में रहकर आलौकिक सुख प्रदान करता है। स्वयं से स्वयं को ढूंढ़ना ही आंतरिक मौन है। वही ईश्वर से साक्षात्कार है। आत्मा में ही परमात्मा का वास होता है। आंतरिक मौन सृष्टि का अनहद नाद है, जिसे सिर्फ महसूस किया जा सकता है।

संसार में रहकर संसार से विरक्ति सबसे कठिन कार्य है। आसक्तियां ही सांसारिक कार्यों को फलीभूत करवाती हैं। जीवन का द्वैत ही यही है कि यदि अध्यात्म को अपनाते हैं तो कर्तव्यों से विमुख हो जाते हैं और कर्तव्यों का निर्वाह, बिना आसक्तियों के होता ही नहीं। इसी झंझावात में जीवन-यापन हो जाता है। वास्तविकता यही है कि हम दो दुनिया में जीते हैं। बाहरी दुनिया जो कर्मशील दुनिया है, जहां हम अपना किरदार निभाने के लिए बाध्य हैं। वो हमें थोड़ी आसक्ति भी देती है। आसक्त होना लाजिमी भी है, क्योंकि वही हमें कर्मशील बनाता है। दूसरी दुनिया है आत्मा का आनंद, जिसे हम स्वयं के भीतर अनुभव कर सकते हैं। ये हमारी अपनी खोज है, अपनी पूंजी है। इसे हम ही प्राप्त कर सकते हैं और इसे कोई हमसे छीन भी नहीं सकता। बाहरी क्रियाकलापों का विराम ही आंतरिक मौन है। बाहर कितना ही शोर हो यदि आंतरिक शांति है तो आप हर जगह विजयी होंगे। कहने का सार यही है कि अपने जीवन की सांसारिक यात्रा के विभिन्न पड़ावों को पूरा करते हुए भी अंतिम ध्येय अंतस का मौन ही होना चाहिए। *

दोहे / घमंडीलाल अग्रवाल

सूनी-सी दहलीज

सूना घर का आंगना, सूनी-सी दहलीज।
भूख, गरीबी बो चुकी, घर गरीब के बीज।।
जैसे को तैसा मिले, हो हमलावर पस्त।
वह भी फिर आश्वस्त-सा, हम भी फिर आश्वस्त।।
बदल रही है जिंदगी, बदल रहा है दौर।
निसदिन नई चुनौतियां, हर पल करिए गौर।।
पांव कुल्हाड़ी मार ली, गए संभलना भूल।
गड्ढा आया सामने, काहे गिरे फिजूल।।
गीता, रामायण पढ़ी, बांचे वेद, कुरान।
हो न सका इंसान तो, एक अदद इंसान।।
भरी भीड़ में हम हुए, बहुत अकेले आज।
अपनेपन का बांधते, किसके सिर पर ताज।
यदि कुपात्र को धन दिया, धन होगा बेकार।
ज्यादा खाकर वस्तुएं, जैसे तन बीमार।।
वाटर एटीएम लगे, सूखे सारे कूप।
परिवर्तन का मोहरा, खड़ा बदलकर रूप।।
फिसला करती हाथ से, पाई कोई चीज।
होते हैं संसार में, ऐसे कुछ नाचीज।।
भले विवेकानंद हों, अथवा गौतम बुद्ध।
कर्तव्यों से ही लड़े, अधिकारों के युद्ध।।

तृप्ति

जहां आर्थिक रूप से कमजोर बड़े बेटे कमल ने कैंसर से पीड़ित पिता के इलाज में कोई कसर नहीं छोड़ी, वहीं छोटे बेटे विमल ने अपनी जिम्मेदारी से मुंह मोड़े रखा। पिता के देहांत के बाद उनकी तेरहवीं में विमल ने जैसा दिखावा चाहा, वह अपमानजनक था। एक मर्मस्पर्शी कथा।

छोटी कहानी
सविता गोयल

यह क्या भैया! ना आपने सारे नाते-रिश्तेदारों को न्यौता दिया और ना ही भोज का आयोजन सही तरीके से किया। समाज में क्या इज्जत रह जाएगी हमारी! अरे पैसे कम पड़ रहे थे तो एक बार बोल दिया होता हमसे। मैं ही कुछ इंतजाम कर देता। पापा की तेरहवीं पर मेरे ससुरजी भी आने वाले हैं। वो क्या सोचेंगे, उनके दामाद ने अपने पिता की तेरहवीं भी ढंग से नहीं की। आप सबको तो पता ही है, वो कितने बड़े आदमी हैं। मेरी क्या इज्जत रह जाएगी उनके सामने?' कमल का छोटा भाई विमल अपनी ही रौब में बोलता जा रहा था।

मनोहरजी को गुजरे आज ग्यारह दिन हो गए थे। पिछले दो साल से वह बहुत पीड़ा में थे। कैंसर की बीमारी में एक-एक दिन सालों की तरह गुजर रहे थे। उनका बड़ा बेटा कमल और बहू मीना ने अपने पिता की सेवा और इलाज में अपनी तरफ से कोई कसर नहीं छोड़ी। किराने की दुकान में कोई ज्यादा कमाई नहीं थी, लेकिन जितना बन पड़ा, उसमें उन्होंने कभी अपना हाथ पीछे नहीं खींचा।

कमल अपने माता-पिता के साथ ही रहता था। छोटा बेटा विमल जब से पढ़-लिखकर इंजीनियर बनकर शहर में बसा, कभी पलट कर वह घर नहीं आया। नौकरी अच्छी थी तो बड़े घर की लड़की का रिश्ता भी आ गया था। अब तो विमल के और भी पंख लग गए थे।

पिता की बीमारी का पता होने के बाद भी कभी उसने उनके इलाज और देखभाल में बड़े भाई का हाथ नहीं बंटाया। एक बार कांता देवी ने विमल से कहा भी, 'बेटा, कमल का हाथ थोड़ा तंग रहता है, ऊपर से तेरे पिताजी की बीमारी पर बहुत पैसा खर्च हो रहा है। तुम थोड़ी मदद कर दोगे तो उसे थोड़ी राहत मिलेगी।'

इस पर विमल का जवाब था, 'मां, आपको क्या पता, मेरी कमाई से ज्यादा तो मेरा खर्च है। आप लोग तो यहां पुश्तैनी मकान में रहते हैं, लेकिन मुझे तो हर महीने फ्लैट का किराया भी देना पड़ता है। आगे मेरा परिवार भी बढ़ रहा है तो खर्चे भी बढ़ रहे हैं फिर इस बीमारी का क्या पता ठीक हो ना हो! बेकार में लुटने-पिटने से क्या फायदा?'

बेटे के मुंह से ऐसा सुनकर कांताजी ने कभी दोबारा उसे किसी प्रकार की मदद के लिए नहीं कहा। मनोहरजी बच तो नहीं पाए, लेकिन अपने बड़े बेटे-बहू के सेवाभाव को देखकर उनके हृदय में हमेशा उनके लिए आशीर्वाद के भाव रहते। कांता देवी पति की मृत्यु से आहत थीं, ऊपर से आज मनोहरजी की तेरहवीं पर आए विमल के मुंह से ये सब सुनकर उन्हें बहुत बुरा लग रहा था। अपने बड़े बेटे को असमंजस में देख उन्होंने समझाया, 'कमल, तुझे किसी की बातों में आकर अपनी हैसियत से बाहर कुछ करने की जरूरत नहीं है। तूने अपने पिता के जीते जी उनकी जो जी-जान से सेवा की है, वो उसी से तृप्त हो गए हैं। ये ऊपरी दिखावा और कर्मकांड उनके लिए अब कोई मायने नहीं रखता। तू जितना कर रहा है, वह बहुत है। तेरे पिताजी की आत्मा तो तेरी सेवा से ही तृप्त हो गई है बेटा। बस पांच ब्राह्मणों को भोजन करा दे और अपने पिता का तर्पण कर दे।' फिर कांता देवी अपने छोटे बेटे विमल के मुखातिब होते हुए बोलीं, 'आज तुझे यहां सारे कामों में जो कमी नजर आ रही है, वह उस समय क्यों नजर नहीं आई, जब तेरे पिताजी बीमारी से तड़प रहे थे और तेरा यह भाई तंगी से जूझते हुए भी रोज उन्हें लेकर अस्पताल के चक्कर लगा रहा था। उसे अपने दिन का चैन और रातों की नींद की भी परवाह नहीं थी। उस समय तो तेरे मुंह से एक बार भी नहीं निकला कि भैया, पिताजी के इलाज में मैं कुछ मदद कर दूं। उस वक्त तुझे यहां कोई कमी नजर नहीं आई? बेटा तू अपने पैसे अपने पास रख, पता नहीं कब तुझे इनकी जरूरत पड़ जाए। मां हूं, इसलिए कभी अपने दिल और जुबान से तेरा बुरा नहीं सोचूंगी, लेकिन बेटा जब तेरे बच्चे अपनी जिम्मेदारियों से मुंह मोड़ेंगे तब तुझे अपने मां-बाप का दर्द समझ में आएगा।'

यह सुनकर विमल का सिर झुक गया। उसे अपनी मां और भाई से नजरें मिलाने की हिम्मत भी नहीं हो रही थी। कमल ने अपने सामर्थ्य अनुसार अपने पिता का तर्पण और भोज कराया।

कांता देवी के चेहरे पर आज संतुष्टि के भाव थे। उन्हें विश्वास था कि उनके पति तृप्त होकर इस दुनिया से विदा हुए हैं। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

देश की स्वर्णाभा नरेंद्र मोदी

आजादी के बाद देश के विकास और इसे सशक्त बनाने में भारत के सभी प्रधानमंत्रियों की भूमिका रही है। इसी क्रम में वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अब तक के अपने कार्यकाल में कई महत्वपूर्ण और अभूतपूर्व कार्य किए हैं और इस दिशा में निरंतर प्रयासरत भी हैं।

फिर वो चाहे विश्व में भारतवर्ष की प्रतिष्ठा बढ़ाने की बात हो, कश्मीर से धारा 370 हटाने का ऐतिहासिक कदम हो, कोरोना काल का मजबूती से सामना करना रहा हो, महिलाओं और गरीबों के सशक्तिकरण के लिए किए गए प्रयास हों या आतंकी गतिविधियों का मुंहतोड़ जवाब देना हो। इस पुस्तक में उनके ऐसे तमाम प्रयासों की विस्तार से चर्चा की गई है। इसमें लेखक ने नरेंद्र मोदी के व्यक्तित्व के कई पहलुओं को भी उजागर किया है। *

पुस्तक: भारतवर्ष की स्वर्णाभा नरेंद्र मोदी,
लेखक: प्रोफेसर (डॉक्टर) रमेश चंद्र तोमर,
मूल्य: 600 रुपए, **प्रकाशक:** प्रभात प्रकाशन, आसफ अली रोड, नई दिल्ली

रोचक
शिखर चंद जैन

रेल यात्राएं तो आपने भी जरूर की होंगी। लेकिन देश-दुनिया में कुछ रेलगाड़ियां ऐसी हैं, जो हजारों किलोमीटर की यात्रा करती हैं। दुनिया की सबसे लंबी दूरियां तय करने वाली इन रेलगाड़ियों से यात्रा का अनुभव बेहद अनोखा और मजेदार होता है। इनमें से कुछ लंबी रेल यात्राओं पर एक नजर।

सबसे लंबी दूरी तय करने वाली अनोखी-शानदार रेल गाड़ियां

इंडियन पैसिफिक एक्सप्रेस

जैसा कि नाम से ही जाहिर है, यह ट्रेन आपको दुनिया की सबसे यादगार ट्रेन यात्रा के रूप में दो महासागरों को पार करवाती है। सिडनी से पर्थ तक का 4352 किमी. लंबा यह रेल मार्ग आपको अनूठे लोक की यात्रा का अनुभव देता है। विशाल ऑस्ट्रेलिया महाद्वीप को पार करते हुए आप यहां के दिलकश नजारे देखेंगे तो मानो हिप्नोटाइज हो जाएंगे। कई जगह तो आपको वन्य जीवन की झांकी भी देखने को मिलेगी। इस ट्रेन में यात्रियों के लिए कई क्लास के कोच हैं, जैसे गोल्ड सर्विस के तहत स्लीपर केबिन। आर रेड सर्विस के तहत डे नाइटर सीट। स्लीपर केबिन में आप तमाम सुविधाओं से सुसज्जित सिंगल या ट्विन स्लीपर केबिन ले सकते हैं और स्वादिष्ट ऑस्ट्रेलियन भोजन का लुत्फ उठा सकते हैं। जबकि आर रेड सर्विस के तहत डेनाइटर सीट दी जाएगी, जिस पर सोने की सुविधा भले ही न हो पर आपको आरामदायक तरीके से बैठने की सुविधा जरूर मिलती है। यहां पर्याप्त लेगस्पेस है, कोहनी टिकाने के लिए आरामदायक हत्थे हैं, वीडियो देखने की सुविधा है। इन डिब्बों में भी स्नैक्स, कॉफी, लंच, डिनर सब कुछ उपलब्ध कराया जाता है। k

ट्रांस-साइबेरियन एक्सप्रेस

दुनिया की सबसे लंबी दूरी तय करने वाली यात्री ट्रेन है, ट्रांस साइबेरियन एक्सप्रेस। मॉस्को से व्लाडीवोस्टक तक फैली 9288 किमी. की पटरियों पर सरपट दौड़ती यह ट्रेन आपको वाकई एक यादगार यात्रा का अनुभव देती है। 77 किमी. प्रतिघंटे की रफ्तार से दौड़ने वाली इस ट्रेन में बिताए करीब 146 घंटे (करीब 6 दिन) आप शायद ही अपनी जिंदगी में कभी भुला पाएं, क्योंकि इन 6 दिनों में आप कभी पहाड़ों के बीच से गुजरेंगे, तो कभी हरी घास से भरे मैदानों से, कभी यह ट्रेन आपको रेगिस्तान के दृश्य दिखाएगी, तो कभी हरे भरे बियाबान जंगल के बीच से ले जाएगी। k

झिंगू हाइ स्पीड रेल

आज की तारीख में अगर लंबी दूरी तय करने वाली सबसे तीव्र गति वाली यात्री रेगलाड़ी का जिक्र होता है, तो उनमें झिंगू हाइ स्पीड रेल सबसे ऊपर है। यह ट्रेन बीजिंग से शंघाई की 1303 किमी. की यात्रा मात्र 5 घंटे में तय कर लेती है। इसकी गति 300 किमी. प्रतिघंटे तक हो सकती है। k

भारत की सबसे लंबी रेल यात्रा

भारत की सबसे लंबी रेल यात्रा विवेक एक्सप्रेस तय करती है। यह 9 राज्यों से होकर गुजरती है। यह असम के डिब्रूगढ़ से तमिलनाडु के प्रसिद्ध स्थल कन्याकुमारी तक चलती है। यह रेलमार्ग लगभग 4,273 किलोमीटर लंबा है। इस सफर को तय करने में लगभग 80 घंटे लगते हैं। इस ट्रेन का नाम स्वामी विवेकानंद के नाम पर रखा गया है। अपने इस सफर में यह ट्रेन लगभग 55 स्टेशनों पर रुकती है। k

द ब्लू ट्रेन

दक्षिण अफ्रीका की मशहूर ब्लू ट्रेन प्रीटोरिया से केपटाउन के बीच 1600 किमी. की यात्रा तय करती है। सच कहें, तो यह ट्रेन पटरी पर दौड़ने वाले किसी होटल की मानिंद है। इसमें कई सूट्स भी हैं, जहां होटल जैसी सुविधाएं मौजूद हैं। यात्रा बहुत लंबी नहीं है। करीब 27 घंटे की इस यात्रा के दौरान अफ्रीका के तस्वीर सरीखे कुदरती दृश्य आपका मन मोह लेंगे। इस ट्रेन की गति कोई खास नहीं, मात्र 57 किमी. प्रति घंटे है, क्योंकि इसे होटल रूम सरीखे डिब्बों को जरा नजाकत से ही चलाना पड़ता है और यात्रियों की सुख-सुविधा का खयाल भी रखना पड़ता है। k

द कनाडियन ट्रेन

टोरंटो से वैंकुवर की यात्रा करवाने वाली यह ट्रेन जर्नी आपको 83 घंटे तक सैर कराती है। इस दौरान यह ट्रेन आपको कनाडा के विभिन्न मनोहर दृश्यों से भरी 4466 किमी. दूरी का अवलोकन करवाती है। ट्रेन की गति पहाड़ों की चढ़ाई में कभी मंद पड़ जाती है, तो हरे-भरे चित्ताकर्षक जंगलों से गुजरने के दौरान तेज भी हो जाती है। इस ट्रेन में कांच से बनी बड़ी-बड़ी खिड़कियों से तरह-तरह के दृश्यों को देखना वाकई रिलैक्सिंग और पीसफुल एक्सपीरियंस देता है। k

चाइना यूरोप ब्लॉक ट्रेन

द चाइना यूरोप ब्लॉक ट्रेन, दुनिया की सबसे लंबी दूरी तय करने वाली ट्रेन है। यह यीबू से मैड्रिड तक की 9977 किमी. की यात्रा करीब 21 दिनों में तय करती है। लेकिन यह कोई यात्री ट्रेन नहीं बल्कि मालगाड़ी है। k

अमल करने से ही बनेगी बात

स्मार्टफोन के स्क्रीन से हर पल प्रेरणादायक विचारों की बौछार होती रहती है। लोग इसमें रुचि भी खूब लेते हैं। लेकिन अगर आप स्वयं में सकारात्मक बदलाव देखना चाहते हैं तो सिर्फ मोटिवेशनल कंटेंट देखना नहीं, उस पर अमल भी करना होगा।

सेल्फ मोटिवेशन / चैतन्या

इन दिनों सोशल मीडिया पर भी मोटिवेशनल वीडियो की भरमार है। ज्ञान फैलाने के लिए बाकायदा एप्स बने हुए हैं। मन-मस्तिष्क को मोटिवेशन देने वाले शब्द लिखित हों या मौखिक, किसी ना किसी रूप में हर पल सामने आते रहते हैं। जीवन को साधने वाले इस कंटेंट को यूजर्स द्वारा खूब देखा-सुना भी जाता है। बावजूद इसके व्यावहारिक धरातल पर जनमानस में इसका असर नहीं दिखता। आंतरिक या बाहरी शक्ति जगाने को सुने गए विचार आत्मसात नहीं किए जा रहे हैं। इनसे प्रेरणा पाकर जन-जीवन में बदलाव लाने के भावों को बल नहीं मिल रहा।

ज्ञान को जीवन में उतारना: भगवान दत्तात्रेय ने सिखाया है कि सच्चा ज्ञान कहीं से भी, कभी-भी प्राप्त किया जा सकता है, बस व्यक्ति की दृष्टि पवित्र और समझदार होनी चाहिए। उन्होंने स्वयं भी प्रकृति के तत्वों, पशुओं और विभिन्न व्यक्तियों, गुरुओं के रूप में ज्ञान प्राप्त किया। पृथ्वी से सहनशीलता, वायु से अनासक्ति और बालक से खुशी का ज्ञान लिया। भगवान दत्तात्रेय का यह सिद्धांत यही बताता है कि ज्ञान का कोई तयशुदा स्रोत नहीं होता। जिज्ञासु और विवेकशील इंसान अपने परिवेश के कण-कण से कोई सीख ले सकता है। हर घटना, हर प्राणी और प्रकृति के हर तत्व से जीवन के गूढ़ रहस्यों को सीख सकता है। असल में यूं ही जीवन से जुड़े विभिन्न स्रोतों से ज्ञान लेना भी चाहिए। परीक्षा तो इन पढ़े, जाने, सुने गए पाठों को जीवन में उतारने के मोर्चे पर होती है। सोशल मीडिया में दिखते मोटिवेशनल कंटेंट को व्यक्ति स्क्रीन स्क्रॉल करते ही भुला देता है। इनमें वह गुरुत्व शक्ति नहीं होती, जो गुणीजनों के सान्निध्य में मिलती है। तभी तो आत्म जागरुकता लाने वाले उद्धरण भी जानकारी, सूचना या कोई समाचार भर बनकर रह जाते हैं।

गुणीजनों का जीवन ही प्रेरणा: हमारे यहां सदा से ही ज्ञानी-गुणीजन जीवन संवारने के उपदेश देते रहे हैं। संसार को दिशा देने वाला ग्रंथ गीता भी श्रीकृष्ण के उपदेश ही लिए है। विचारणीय यह है कि गुणीजनों के विचार ही नहीं उनका जीवन भी प्रेरणादायी रहा है। जिसके चलते आमजन में उनकी कही बातों को आत्मसात करने का भाव रहा। उनके दिखाए मार्ग पर चलने की प्रतिबद्धता रही। अच्छे विचारों को व्यक्तिगत ही नहीं, सामाजिक-पारिवारिक परिवेश में भी जिंदगी का हिस्सा बनाने का प्रयास रहा। इसकी वजह यह है कि गुरु बोलते भर नहीं, स्वयं अपनी जीवन पद्धति भी बदलते हैं। कहा भी जाता है कि सच्चा गुरु केवल ज्ञान या उपदेश देकर नहीं, बल्कि अपने आचरण और जीवनशैली से शिष्यों के जीवन को दिशा और प्रेरणा देते हैं। स्पष्ट है कि इसी के चलते सिद्ध पुरुषों के विचार ही जीवन में फलित होते हैं। सोशल मीडिया पर तैरते मोटिवेशनल आख्यानों में प्रेरणा देने की बातें भर हैं। इन बातों को कहने-समझाने वालों का अपना जीवन लोगों को प्रभावित करने वाला नहीं है। इतना ही नहीं शेयर कर आगे बढ़ाने की तकनीकी सहूलियत से हर कोई यह ज्ञान किसी दूसरे व्यक्ति तक तो पहुंचा रहा है पर अपने कर्मों में नहीं उतार रहा। बहुत से इंफ्लुएंसर तो प्रेरणादायी शब्दों को अपनी मार्केटिंग माध्यम बना चुके हैं। वहीं आत्म-विकास हो या आंतरिक शांति गुरुओं का जीवन ही सहज ढंग से व्यक्ति को नैतिक मार्गदर्शन देता है। जीवन को संवारने की सच्ची शिक्षा ही नहीं मिलती, उन उपदेशों से मन को साधने में भी मदद मिलती है।

मोटिवेशनल वीडियो देखने की वजह: जिंदगी में मौजूद किसी भी समस्या से पार पाने, अपने लक्ष्य तक जाने या मन को शांत सहज रखने के लिए मोटिवेशनल वीडियो खूब देखे जा रहे हैं। जबकि असल जीवन में प्रेरणादायी बातों से मनःस्थिति बदलने की प्रतिबद्धता नहीं दिखती। बावजूद इसके सोशल मीडिया प्रेरक सामग्री से अटा पड़ा है। असल में इसके पीछे आनंद के सिद्धांत और डोपामाइन हार्मोन को बढ़ाने की प्रणाली एक अहम कारण है। ऐसा कंटेंट देखने से व्यक्ति को त्वरित संतुष्टि और एक भावनात्मक सहारा मिलता है।

अमल करना सबसे जरूरी: निःसंदेह, जीवन से जुड़ी चुनौतियों का सामना करने और लक्ष्यों को पाने के लिए आगे बढ़ने हेतु सही कार्य योजना जरूरी है। वर्चुअल स्क्रीन में झांकते रहने के बजाय वास्तविक जीवन में नियमित समय और ऊर्जा लगाकर ही अपने आप में बदलाव लाया जा सकता है। आध्यात्मिक उन्नति की जा सकती है। व्यक्तिगत जीवन के हर पक्ष पर संवर्धन किया जा सकता है। k

शर्ट-जैकेट्स, शर्ट और जैकेट का कॉम्बो होता है। इन दोनों की खूबियां मिलकर शर्ट-जैकेट्स बनाती हैं। इस सीजन में इनका ट्रेंड यंगस्टर्स में काफी बढ़ रहा है।

इन हल्की सर्दियों में युवाओं को भा रहीं शर्ट-जैकेट्स

फैशन ट्रेंड
प्रतिमा अरोड़ा

शर्ट-जैकेट्स या जिसे फैशन की भाषा में शैकेट्स भी कहा जाता है, इस साल की हल्की सर्दियों में युवाओं की पहली पसंद बनी हुई हैं। ना सिर्फ स्टाइल के कारण बल्कि इनके आरामदायक, वर्सटिलिटी और मॉडर्न लुक की वजह से भी ऐसा हुआ है।

क्या होती है शर्ट जैकेट: शर्ट-जैकेट्स, दिखती तो शर्ट जैसी हैं, लेकिन इनका फैब्रिक मोटा होता है और ये हल्की सर्दियों में गर्माहट देकर जैकेट का भी काम करती हैं। इसलिए इन्हें शर्ट-जैकेट्स कहा जाता है। इन्हें पहनने के लिए जरूरी नहीं है कि मौसम बहुत ठंडा ही हो। अगर हल्की हवा चल रही हो तो भी इन्हें आराम से पहना जा सकता है।

इनकी खासियतें: शर्ट-जैकेट्स ट्विल, डेनिम, वूलेन फ्लैनल, कॉटन ब्लेंड या कॉर्डराय से बनती हैं। इनकी डिजाइन बेहद आकर्षक होती है, जिनमें आगे बटन, दो या चार पॉकेट और किसी में खड़ी तो कई में गिरी कॉलर होती हैं यानी दिखने में ये बिल्कुल शर्ट जैसी लगती हैं, लेकिन शर्ट के मुकाबले थोड़ी मोटी होती हैं। हालांकि इनका वजन कड़ाके की सर्दियों में पहनी जाने वाली जैकेट्स के मुकाबले काफी कम होता है। फिर भी ये शर्ट के मुकाबले वजनदार होती हैं। ट्रांजिशन वेदर यानी जब न तो ज्यादा सर्दी होती है और न ज्यादा गर्मी, कहने का मतलब पूरी तरह से बारिश के बाद की गर्माहट का मौसम गया नहीं होता और पूरी तरह से सर्दियां आई नहीं होतीं, इस दौरान इन्हें पहनना सबसे सही लगता है। क्योंकि ऐसे मौसम में जब हल्की ठंड पड़ रही हो, ये बिल्कुल परफेक्ट च्वॉइस होती हैं। इन्हें अंदर टी-शर्ट के रूप में भी पहना जा सकता है। कई बार खुले या बंद दोनों तरीकों से इन शर्ट-जैकेट्स को कैरी किया जा सकता है।

युवाओं को क्यों हैं इतनी पसंद: शर्ट-जैकेट्स युवाओं को बेहद पसंद आती हैं। वास्तव में इन दिनों कपड़ों में लेयरिंग ट्रेंड में है यानी, कई परतों में ड्रेस पहनकर अलग-अलग लुक बनाना। शर्ट-जैकेट्स इस लेयरिंग फिनोमिना की स्टार आइटम है। इसे आराम और स्टाइल के साझे कॉम्बिनेशन के रूप में भी देखा और जाना जाता है। यह न तो पूरी तरह से फॉर्मल है और न ही पूरी तरह से कैजुअल बल्कि इसके लिए जो शब्द ज्यादा प्रचलित है, वह है-स्मार्ट कैजुअल। इसलिए ये युवाओं को विशेष रूप से पसंद आती हैं, क्योंकि उनकी बॉडी में ये एक परफेक्ट बैलेंस बनाती हैं। लेकिन इसकी पॉपुलैरिटी की वजह सिर्फ यही नहीं है, इसे पॉपुलर बनाने में सोशल मीडिया का भी बड़ा हाथ है। वास्तव में इंस्टाग्राम, पिंट्रेस्ट और यू-ट्यूब पर फैशन इंफ्लुएंसर लगातार इन्हें प्रमोट कर रहे हैं, जिससे युवाओं में इनकी डिमांड काफी बढ़ गई है। सबसे बड़ी बात यह है कि ये शर्ट-जैकेट्स, युवक ही नहीं युवतियों के बीच भी खूब लोकप्रिय हैं, क्योंकि इन्हें दोनों ही बड़े आराम से पहन सकते हैं। ये दोनों की बॉडी पर खूब फबती हैं। शर्ट-जैकेट्स पहनने का एक फायदा यह भी है कि इसके कारण बहुत कम कपड़ों पर भी एक कंप्लीट आउटफिट तैयार हो जाता है। बस एक बेसिक टी-शर्ट, डेनिम और ये शर्ट जैकेट्स, बस समझिए पूरा आउटफिट तैयार हो गया।

इस साल है इसका ट्रेंड: इन दिनों यह फैशन या ट्रेंडिंग स्टाइल में इसलिए है, क्योंकि इस साल पुरुषों द्वारा डेनिम और फ्लैनल चेक्ड शर्ट-जैकेट्स को खासतौर पर पसंद किया जा रहा है। अपने नए लुक, स्मार्ट डिजाइन और कलर कॉम्बिनेशन के कारण ये यंगस्टर्स की पहली पसंद बनी हुई हैं तो लड़कियों में भी कुछ खास कलर्स की शर्ट-जैकेट्स इस साल खूब फैशन में हैं, जिनमें पेस्टल टोन कलर सबसे खास है। साथ ही लड़कियों में इनका ओवरसाइज्ड डिजाइन भी खूब हिट है। चूंकि यह एक यूनिसेक्स फैशन है, इसलिए शर्ट-जैकेट्स को खूब सारे न्यूट्रल कलर्स में भी देखा जाता है जैसे- बेज, ऑलिव, ब्लश पिंक और ग्रे।

कुल मिलाकर शर्ट-जैकेट्स इन दिनों युवाओं के बीच इसलिए भी खूब फैशन में हैं, क्योंकि ये सिर्फ एक ड्रेस भर नहीं हैं बल्कि लाइफस्टाइल का सिंबल बन गए हैं। कम लेयरिंग, ज्यादा स्टाइल और हर मौके पर फिट रहने वाली शर्ट-जैकेट्स आज यंगस्टर्स के बीच पहली पसंद बनी हुई हैं। जहां तक इसके स्टाइल कॉम्बिनेशन की बात है तो शर्ट-जैकेट्स में स्टाइलिश लुक के लिए इसे बेसिक टी-शर्ट या टर्टलनेक के ऊपर पहनते हैं। साथ ही लोअर में डेनिम, चिनो या स्कर्ट पर भी यह बहुत आसानी से मैच कर जाती है। स्कार्फ या कैप के साथ भी इसे कैरी करना अटपटा नहीं बल्कि आकर्षक लगता है। जहां तक फुटवियर्स की बात है तो स्नीकर्स या लोफर इसके साथ अच्छे लगते हैं। k

जिस दौर में कई सुपर स्टार्स बॉलीवुड में एक्टिव थे, उस समय में भी संजीव कुमार ने अपने एक्टिंग टैलेंट से अलग पहचान बनाई। संजीव कुमार की पुण्य तिथि 6 नवंबर पर उनके द्वारा निभाए कुछ यादगार किरदारों पर एक नजर।

हर रोल निभाने में परफेक्ट वर्सटाइल एक्टर संजीव कुमार

यादें
मनोज प्रकाश

सुपर स्टार का ग्लैमर, हिट कराने का तमगा और स्लिम-ट्रिम फिगर अगर किसी हीरो की इमेज को एक डेकोरम देता है, तो किसी भी भूमिका को परफेक्ट तरीके से करना भी किसी फिल्म को हिट कराने की गारंटी हो सकती है। यह बात सिद्ध की थी संजीव कुमार ने। वह एक ऐसे कलाकार थे, जिनके बारे में कहा जाता था कि वे कोई रोल निभाते नहीं, उसे पूरी तरह जीते थे। जिस तरह हिंदी फिल्म इंडस्ट्रीज में दिलीप कुमार, अमिताभ बच्चन, धर्मेंद्र, राजेश खन्ना, देवानंद, राजकपूर को बेहतरीन अभिनेता माना जाता है, उसी श्रेणी में संजीव कुमार का नाम भी बड़े सम्मान से लिया जाता है।

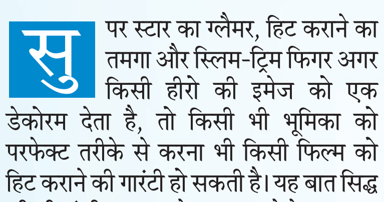

'आंधी' में सुचित्रा सेन के साथ संजीव कुमार

हर तरह की भूमिकाएं निभाईं : 9 जुलाई 1938 को गुजरात प्रांत में जन्मे, संजीव कुमार ने जितनी भी फिल्में की सभी में उनके डायलॉग से अधिक उनकी आंखें और मुस्कुराहट ने अभिनय किया। संजीव कुमार हिंदी फिल्मों के ऐसे अभिनेता थे, जिन्होंने हर तरह की भूमिकाएं कीं। यहां तक कि उन्होंने एक ही फिल्म में एक साथ नौ भूमिकाएं निभाकर एक ऐसा कमाल किया, जो 'भूतो न भविष्यति' है। उनके किरदार ऐसे हुआ करते थे, जिन्हें भुला पाना संभव ही नहीं है। 'शोले' और 'आंधी' उनकी दो ऐसी फिल्में रहीं, जिनको भारतीय सिनेमा में मील का पत्थर माना जाता है।

'शोले' में ठाकुर का यादगार किरदार: 'शोले' में संजीव कुमार ने पहले जेलर और फिर ठाकुर बलदेव सिंह का रोल बखूबी निभाया। पूरे परिवार को डकैत गब्बर सिंह द्वारा खत्म कर दिए जाने और उनके दोनों हाथ काट दिए जाने के बाद भी ठाकुर बलदेव सिंह ने जिस तरह से अपना प्रतिशोध लिया, उसने आने वाली फिल्मों के लिए एक मानक बना दिया।

हर किरदार में अलग रंग: फिल्म 'आंधी' में संजीव कुमार के द्वारा निभाए गए होटल मैनेजर जेके का रोल आज भी दर्शक याद करते हैं। उस फिल्म में उन्होंने एक बेबस पति लेकिन समर्पित प्रेमी के रोल में अभिनय की पराकाष्ठा को छुआ था। जहां तक उनके अभिनय में मौजूद वर्सटिलिटी की बात है तो 'खिलौना' में विजय, 'अनामिका' में देवेंद्र, 'सच्चाई' में किशोर, 'बचपन' में काशीराम, 'नमकीन' में गेरूलाल, 'राजा और रंक' में विजय और सुधीर, 'कोशिश' में हरिचरण, 'अंगूर' में अशोक और 'वक्त की दीवार' में विक्रम के किरदार ऐसे हैं, जिनसे उनकी प्रतिभा का लोहा सभी ने माना। 'उलझन' में उन्होंने सुलक्षणा पंडित के साथ एक ईमानदार अफसर और पति के रूप में फंसे व्यक्ति के द्वंद्व को बेहतरीन तरीके से निभाया। फिल्म 'नया दिन नई रात' में नौ किरदार निभाना और सभी को उसकी धारा में बहाते ले जाना, संजीव कुमार के बस की ही बात थी। उनसे पहले और उनके बाद आज तक किसी ने नौ रोल नहीं निभाए हैं।

ये भी रहे यादगार किरदार: संजीव कुमार को फिल्म 'दस्तक' के लिए हामिद का गंभीर किरदार निभाने हेतु राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किया गया था। इसके उलट 'पति, पत्नी और वो' में तो उन्होंने हंसा-हंसाकर लोगों को लोटपोट कर दिया था। पत्नी की बीमारी की आड़ में सेकेट्री से प्रेम राग आलापना और पत्नी को समझाना, उस दौर में एक ऐसी कहावत बन गया था कि लोग रियल लाइफ में ऐसे किसी मामले में आपस में एक-दूसरे को कह देते थे-संजीव कुमार बन रहे हो? संजीव कुमार के द्वारा निभाए गए यादगार किरदारों में 'मौसम' के डॉक्टर अमरनाथ को कैसे भूला जा सकता है? इस फिल्म में उनका डबल रोल, शर्मिला टैगोर के रोल से किसी तरह से कमतर नहीं रहा। इसी तरह फिल्म 'त्रिशूल' तो अमिताभ की कही जाती है, लेकिन इसमें संजीव कुमार ने एक ऐसे व्यापारी का रोल प्ले किया, जो अंजाने में ही अपने बेटे से व्यापारिक संघर्ष कर रहा होता है और उसे पता ही नहीं चलता। इसमें पिता-पुत्र के संवाद, दो प्रतिद्वंद्वी व्यापारियों की उस लड़ाई का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसमें वे अपनी जीत के लिए किसी भी स्तर तक जा सकते हैं।

'त्रिशूल' में अमिताभ के पिता के किरदार में संजीव कुमार

उन पर फिल्माए गाने भी हुए हिट: संजीव कुमार पर फिल्माए गाने भी सुपरहिट रहे। 'अनोखी रात' का गीत 'ओह रे ताल मिले नदी के जल में, नदी मिले सागर में', 'खिलौना' का 'खिलौना जानकर तुम तो', 'सीता और गीता' का 'हवा के साथ-साथ, घटा के संग-संग', 'अनामिका' का 'मेरी भीगी-भीगी सी पलकों पे', 'आंधी' का 'तुम आ गए हो, नूर आ गया है', 'मौसम' का 'दिल ढूंढता है फिर वहीं फुर्सत के रात-दिन' और 'सिलसिला' का 'रंग बरसे', हर दौर के हिट गानों की श्रेणी में गिने जाते हैं।

अधूरी रही प्रेम की दास्तान: संजीव कुमार ने जिस तरह से फिल्मों में अपना परचम लहराया, उसी तरह से उनके प्रेम के चर्चे भी खूब सुने जाते रहे। हेमा मालिनी के साथ के किस्से तो सर्वाधिक चर्चित रहे ही हैं। सुलक्षणा पंडित के साथ भी उनकी जोड़ी चर्चित रही पर वह भी अपने मुकाम पर पहुंचने से रह गई। खुद के बारे में की गई अपनी ही भविष्यवाणी को सच साबित करते हुए जीवन के पचास बसंत पूर्ण करने से पहले ही 6 नवंबर 1985 को अनंत आकाश में हमेशा-हमेशा के लिए विलीन हो गए। k